ज्ञानामृत

जुलाई, 1986
वर्ष 22 ❋ अंक 1

मूल्य 1.50

देहली—शक्ति नगर सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक मेले में चैतन्य शक्तियों की झांकी का दृश्य।

कमला नगर—दिल्ली में आयोजित जीवन दर्शन शांति मेले का उद्घाटन कर रहे हैं भ्राता कुलानन्द भारतीय, कार्यकारी पार्षद, नगरनिगम के सदस्य भ्राता नरसिंह दास तथा भ्राता हेमराज मल्होत्रा जी, ब्र.कु. दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य।

मुद्देबिहल में नवनिर्मित ग्रामशांति भवन के उद्घाटन अवसर पर बोलती हुई ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी।

विराट नगर में विशाल प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता रिजाल जी।

माउंट आबू—ओमशांति भवन में 'राजयोग द्वारा संपूर्ण स्वास्थ्य' विषय पर गुजरात के राज्यपाल भ्राता आर.के. त्रिवेदी जी सम्बोधित करते हुए ।

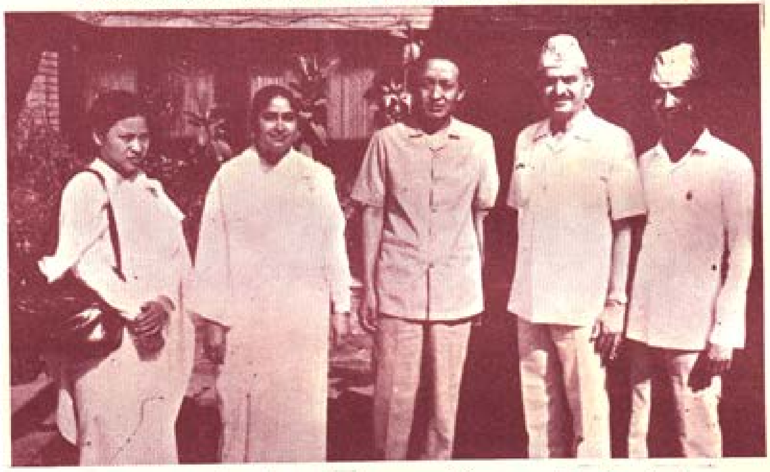

काठमाण्डू: नेपाल के नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री भ्राता मानसिंह श्रेष्ठ जी को प्रधानमंत्री का पद संभालने पर बधाई देने पश्चात् ब्र.कु. भाई-बहिनें उनके साथ खड़े हैं ।

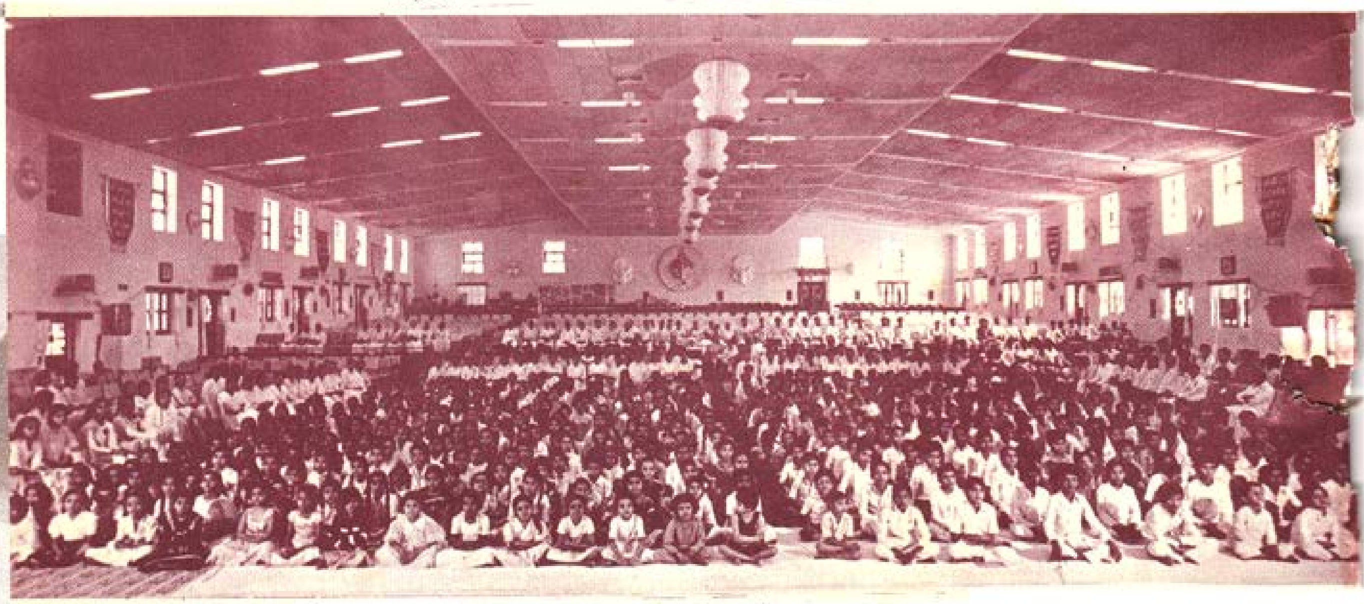

२५-३१ मई तक हुए बाल-युवा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के अवसर पर बाल, युवा तथा आध्यापकगण ओमशांति भवन, माउंट आबू में ।

महुआ में आयोजित 'स्वर्ण युग मेले' का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी दीप प्रज्वलित कर, कर रही हैं ।

देवलाली कैम्प (नासिक) में स्वर्ण जयन्ति के निमित विश्व शांति आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए भ्राता बोमी नेतरवाला, उपाध्यक्ष केन्टोनमेन्ट बोर्ड देवलाली कैम्प ।

कसौली में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन में बोलती हुई ब्र.कु. दादी चन्द्रमणि जी । ब्र.कु. अमीर चन्द, डॉ. एस.एन. सक्सेना, ब्र.कु. अचल मंच पर हैं ।

बिलासपुर (म.प्र.) में ब्र.कु. ममता उपमहापौर भ्राता अनिल टाह को चित्रों की व्याख्या करते हुए ।

गुजरात के राज्यपाल महोदय जी ओमशांति भवन की आर्टगैलरी का अवलोकन करते हुए ।

Regd No.10563/65-D(E)-70

कानपुर: सेवाकेंद्र पर संग्रहालय का अवलोकन करने के पश्चात् अपने विचार लिपिबद्ध करते हुए डॉ. डी.डी. तिवारी जी, उपकुलपति कानपुर विश्वविद्यालय

शोलापुर के 'शिवप्रकाश भवन' के शिलान्यास का दृश्य । ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. सोमप्रभा, विधायक ब्र.कु. विनायक राव पाटिल जी तथा अन्य भाई-बहिनें ।

मन्दसौर में आयोजित विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन पुलिस अधीक्षक भ्राता एस.एस. शुक्ला जी कर रहे हैं । ब्र.कु. आरती, जयन्ति, सेठ लक्ष्मीनारायण जी तथा हेमलता साथ में हैं ।

गुजरात के राज्यपाल भ्राता आर.के. त्रिवेदी जी के आबू पर्वत पर पधारने पर दादा प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. मनोहर इन्द्रा जी तथा ब्र.कु. निर्वैर जी उनका स्वागत करते हुए ।

मुलुंद (बम्बई) में नए सेवाकेंद्र का उदघाटन करती हुई ब्र.कु. दादा जानकी जी ।

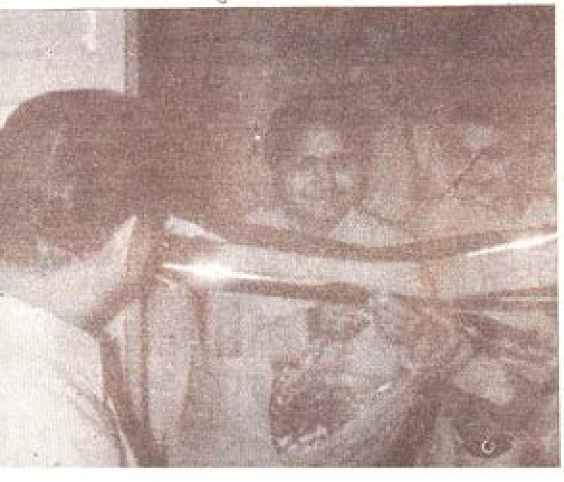

बम्बई में हुए 'पुनर्जन्म' पर निबन्ध प्रतियोगिता केपुरस्कार वितरण समारोह में ब्र.कु. दादी जानकी जी श्रीमती करुणा लाल को चांदी का बैज तथा शील्ड प्रदान करते हुए । इन्होंने प्रथम पुरस्कार जीता ।

अमृत-सूची

१. □□ राजयोग द्वारा संपूर्ण स्वास्थ्य १
२. □□ कर्म और उसका फल (सम्पादकीय) २
३. □□ स्मृति-स्वरूप व नष्टोमोहा ५
४. □□ नई शिक्षा नीति ८
५. □□ नेत्र विशेषज्ञ ९
६. □□ निरअहंकारिता सर्वोच्च सत्ता की १०
७. □□ शिव का कारोबार ११
८. □□ राजयोग के लिये परमात्मा का परिचय १२
९. □□ वैज्ञानिक, दार्शनिक व इतिहासकार क्या करें ? १६
१०. □□ संगम युग १७
११. □□ आत्म विश्वास तथा दृढ़ निश्चय की शक्ति १८
१२. □□ श्वेत परिधान २०
१३. □□ सर्वश्रेष्ठ साथी २२
१४. □□ समस्या—तपस्या २३
१५. □□ धर्म-कर्म २५
१६. □□ सचित्र समाचार २८
१७. □□ समय की सूझ २९
१८. □□ आध्यात्मिक सेवा समाचार ३०
१९. □□ पहेली हल करो तो जानें... ? ३२

कृपया ध्यान दीजिये

1. ज्ञानामृत का नया वर्ष जुलाई अंक से आरम्भ हो गया है । अभी तक कई सेवाकेंद्रों ने अपने सेवाकेंद्रों के ज्ञानामृत के सदस्यों की संख्या नहीं लिख भेजी है । कृपया शीघ्र-अति-शीघ्र लिख भेजें ।
2. मनीआर्डर या ड्राफ्ट केवल 'ज्ञानामृत' या 'Gyan Amrit' के नाम से ही भेजें । मनीआर्डर भेजते समय मनीआर्डर फार्म पर संदेश लिखने वाले स्थान पर अपने सेवाकेंद्र की मोहर अवश्य लगावें या अपना पता साफ-साफ लिखें । पिनकोड भी अवश्य लिखें ।

"राजयोग द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य"

माउण्ट आबू:—गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री रामकृष्ण त्रिवेदी ने चिकित्सकों को परामर्श दिया है कि चिकित्सा के क्षेत्र में राजयोग का सहारा लेने से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं सामाजिक संपूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है ।

भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से आये करीब ३०० चिकित्सा विशेषज्ञों के एक सम्मेलन में मुख्य अतिथि रूप में उद्बोधन देते हुए मान्यवर त्रिवेदी जी ने कहा कि सभी रोग अधिकांशत: मानसिक तनाव से पैदा होते हैं, जो आधुनिक समाज में व्याप्त व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं के कारण होता है । व्यक्ति को इन समस्त दुखों से छुटकारा दिलानेवाला राजयोग, पातंजलि के योग सूत्र के आठ नियमों, स्वामी रामतीर्थ के आत्म चेतना, वृहद अरण्यक एवं याज्ञवल्क्य आदि उपनिषदों में वर्णित है । इसके द्वारा व्यक्ति तनाव मुक्त होकर हृदय रोग, रक्तचाप, हिस्टीरिया आदि बड़े रोगों से ही नहीं छूटता बल्कि परमात्म चेतना द्वारा विश्व प्रेम में तनमय होकर दूसरों को भी मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करके सामाजिक स्वास्थ्य की स्थापना करता है ।

इस सम्मेलन का आयोजन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के विशाल सभागृह ओमशांति भवन में किया गया । राज्यपाल महोदय ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग को चिकित्सा ही नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी बताया । उन्होंने विश्वविद्यालय के मुख्यालय का अवलोकन किया । सम्मेलन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने चिकित्सकों का आह्वान किया कि वे रोगियों का रोग ही नहीं बल्कि इस राजयोग के द्वारा समस्त दुखी इन्सानों का दुख भी दूर करें । उन्होंने कहा कि व्यक्ति अपने कर्मभोग के कारण ही रोग ग्रस्त होता है । इस कर्मभोग को कर्मयोग के द्वारा ही मिटाया जा सकता है ! संसार के लोगों को राजयोग द्वारा चिंता एवं भय से मुक्ति मिलने से समस्त रोगों से मुक्ति स्वत: मिल जायेगी ।

शेष पृष्ठ ४ पर

सम्पादकीय

कर्म और उसका फल

शिव बाबा ने कई मुरलियों में कहा है कि इस संगम युग में हम जो कर्म करते हैं, उसका हमें आनेवाली सतयुगी और त्रेतायुगी दुनिया में कई गुणा फल मिलता है। सतयुगी पवित्र और सुख-शांति मयी सृष्टि की स्थापना के निमित्त हम मनसा, वाचा, कर्मणा अथवा तन, मन, धन से जो कर्म करते हैं, उसके बदले में हमें कई गुणा प्राप्ति होती है। प्रश्न यह है कि **कितने** गुणा प्राप्ति होती है अथवा **कितने** गुणा फल मिलता है? हम बाबा की शिक्षाओं के अनुसार जो कर्म करते हैं, उसका फल किस-किस तथ्य (Factor) पर आधारित है? क्या यह जानने की हमारे पास कोई विधि है कि हमारे किन्हीं कर्मों का **कितने** गुणा फल हमें मिलेगा? उसको जानने की विधि अथवा उसका हिसाब करने का फार्मूला क्या है?

कर्मों का फल कितने गुणा मिलेगा?— इसको जानने की विधि

बाबा ने कई वाणियों में बताया है कि त्याग से ही भाग्य बनता है। बाबा ने यह भी कहा है कि देना ही लेना है अथवा देना ही भविष्य के लिए बीज बोना है। अतः कर्म की गति को जानने वाले शिव बाबा ने हमें स्वयं ही एक यह इशारा तो दे ही दिया है कि हमारे भाग्य का आधार हमारे त्याग पर है। अतः कर्म को त्याग से गुणा करने से जो अंक (Number) प्राप्त हो, वही हमारे भाग्य का सूचक है। त्याग रूपी तथ्य (Factor) को हमें कर्म में जोड़ना (add) नहीं बल्कि गुणा (Multiply) करना है क्योंकि बाबा ने यह दो बातें तो स्पष्ट कह ही दी हैं कि (i) कई गुणा फल मिलेगा और (ii) त्याग से भाग्य बनेगा। परंतु अब प्रश्न उठता है कि त्याग क्या है?

मुख्यतः पांच प्रकार का त्याग

त्याग के विषय को बाबा ने कई मुरलियों में स्पष्ट किया है। एक बार तो बाबा ने त्याग पर पूरा कोर्स ही कराया है। उन सबका यदि सार सोचें तो उनमें से एक है **विकारों का त्याग**। बाबा ने हमें यह तो समझाया ही है कि हमें कर्म का या घरबार का त्याग नहीं करना बल्कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि का त्याग करना है। विकारों के त्याग को ही दूसरे शब्दों में पवित्रता (Purity) कहा जाता है। अतः जब कोई कर्म करता है, उसके फल को जानने के लिए एक तो हमें इस तथ्य को सामने रखना होगा कि कर्म करनेवाले ने इन विकारों में से (i) **किस-किस विकार का** और (ii) कितना त्याग किया है। उसके अनुसार ही उसे कर्म का फल मिलेगा।

दूसरा त्याग है **देहाभिमान का त्याग**। यों जिन विकारों का हमने पहले उल्लेख किया, वे सभी देहाभिमान ही से उत्पन्न होते हैं। इसलिए कोई सोच सकता है कि उन विकारों के त्याग और देहाभिमान के त्याग को अलग-अलग गिनती करने की क्या आवश्यकता है? केवल देहाभिमान ही के त्याग को गिन लेना चाहिए; विकारों का त्याग तो इसमें सम्मिलित हो ही जाएगा। परंतु हम देखते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान और योग का काफ़ी समय अभ्यास करने के बाद एक प्रकार से जीवन बहुत हद तक पवित्र अथवा निर्विकार तो हो ही जाता है परंतु फिर भी हर कर्म करते समय कर्त्ता आत्मा-निश्चय की स्थिति में हो अर्थात् उसने देहाभिमान का त्याग किया हुआ हो—यह जरूरी नहीं है। पवित्रता स्वभावजन्य हो जाने पर भी आत्मा निश्चय की स्टेज निरंतर बनाये रखने का अभ्यास तो अंत तक चलता ही रहता है। इसलिए हमने देहाभिमान के त्याग को एक अलग ही तथ्य (Factor) के रूप में माना है। इस देहाभिमान के त्याग को ही दूसरे शब्दों में योग की स्थिति भी कहा जा सकता है क्योंकि योग के बिना तो देहाभिमान का त्याग हो ही नहीं सकता।

फिर, जो हमें पूर्व कर्मों के अनुसार तन, मन, धन प्राप्त हुआ है अर्थात् हमारे वर्तमान प्रयत्नों के फलस्वरूप हमें कला-कौशल, सत्ता-संपत्ति, घर-दर इत्यादि उपलब्ध हुए हैं, उनमें से अब आसक्ति अथवा **मेरे-पन का त्याग** तीसरी प्रकार का त्याग है। दूसरे शब्दों में इनके होते हुए भी समर्पणभाव का होना एक और तथ्य (Factor) है जो कि हमारे कर्मों के फल को कई गुणा करके हमें देता है। वास्तव में हमारा योग भी ठीक प्रकार से तभी लग सकता है और हम विकारों का त्याग भी यथार्थ रूप में तभी कर सकते हैं जब उसके साथ-साथ हम अपनी सभी प्रकार की वस्तुओं को विरक्त भाव से और प्रन्यासी (Trustee) होकर प्रयोग करें।

जब हम उपरोक्त प्रकार का बताया गया पुरुषार्थ करते हैं तो हमारे जीवन में दिव्यता का उत्कर्ष होता है और पवित्रता एवं ईश्वर-निष्ठा अपना कुछ प्रभाव दिखाने लगती है। तब मान,

उच्च स्थान, महिमा, प्रतिष्ठा इत्यादि प्राप्त होने लगते हैं। वैभव और धन-दौलत भी सहज सुलभ हो जाते हैं। परंतु उनमें भी मेरे-पन का त्याग कर और भोग-भावना को छोड़ साक्षी हो, इन्हें अमानत समझ इसे लोक कल्याण अथवा लोक सेवा के लिए मानना और इसमें त्याग-भाव रखना चौथी प्रकार का त्याग है। "ये ईश्वरार्थ प्राप्त हुए हैं और ईश्वरार्थ ही इनका प्रयोग होना है"—केवल इस भावना को बनाये रखना है। इनको अधिकाधिक अर्जित करने की कामना करना तथा इनके प्राप्त होने पर इनके मद से गर्वित होना, स्वामित्व के भाव से इनका प्रयोग करना तथा इन उपलब्धियों से स्वयं को बड़ा सिद्ध-पुरुष समझना—ये जो भाव हैं, इनका त्याग चौथी प्रकार का त्याग है।

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में उतरने के बाद भी मनुष्य कई हदों में फंस जाता है। सब-कुछ प्रभु का मान लेने के बाद भी ईश्वरार्थ सेवा करने जब वह चलता है तो फिर वह कई प्रकार की हदों में स्वयं को बांधने लग जाता है। दूसरों को 'पहले आप' कहने की बजाय 'पहले मैं' के भाव में फंस जाता है। सहयोग देने में अधिक प्रवृत्त होने की बजाय सहयोग लेने की उसकी स्थिति बनी रहती है। इन हदों का भी त्याग करके विश्व् के कल्याण की कामना करना, विश्व को ही एक परिवार मानना या कम-से-कम सारे दैवी परिवार को ही अपना परिवार मानना; यह पांचवां तथ्य (Factor) है जो हमारे कर्म के फल को कई गुणा कर देता है। इसे हम दूसरे शब्दों में बेहद की बुद्धि अथवा बेहद का त्याग कह सकते हैं।

दानी अथवा वरदानी वृत्ति एवं कृति

ऊपर हमने पांच प्रकार का त्याग बताया है। उनमें से भी हरेक प्रकार के त्याग की अपनी स्टेज, डिग्री अथवा कला होती है। हरेक के त्याग की क्वालिटी (Quality) अलग-अलग होती है। उसकी भी कर्म-फल में गिनती होती है।

इनके अतिरिक्त हम दूसरों को कितने ज्ञान रूपी रत्न, योग रूपी शक्ति अथवा सद्गुण रूपी खज़ाना देते हैं अर्थात् हम कितने दानी और वरदानी रूप से निःस्वार्थ सेवा करते हैं, यह एक छठी प्रकार का तथ्य (Factor) है जो हमारे कर्म के फल को कई गुणा करता है। बाबा ने अनेकानेक मुरलियों में दानी, महादानी अथवा वरदानी बनने पर बल दिया है और कहा है कि वास्तव में "देना ही लेना है" ("To give is to get")

लग्न (Motivation)

फिर जो कार्य हम करते हैं, वह कितनी लग्न से, उमंग और तरंग से और तत्परता से करते हैं, इस पर भी हमारे कर्म का फल निर्भर करता है। कोई व्यक्ति यदि किसी के कहने से, मजबूरी से, अनमने पन से, मर-खप कर यदि कोई काम करता है तो उसका इतना फल नहीं होता। उसकी बजाय जी जान लगाकर प्रभु पर न्यौछावर भाव से तथा लोक सेवा के भाव से विभोर होकर जो कार्य किया जाता है, उसका फल अधिक होता है।

ऐसे ही कोई भी कर्म जब हम करते हैं तो उसके पीछे जो हमारा लक्ष्य, उद्देश्य, मनोकामना (motive) होता है, उस पर भी कर्म का फल निर्भर हुआ करता है। क्या वह कार्य हम इसलिए करना चाहते हैं कि लोग देखें कि हम भी उस कार्य को करने की योग्यता अथवा क्षमता रखते हैं? क्या हम वह कार्य इसलिए करना चाहते हैं कि लोग देखें कि हम में भी सेवा-भाव है? क्या हम वह कार्य इसलिए करना चाहते हैं कि लोग हमारी तारीफ करें, तालियां बजायें, यशोगान करें और हमें बड़ा व्यक्ति मानें या हम इसलिए करना चाहते हैं कि दूसरों का भला हो, उनका कल्याण हो, अथवा उनकी सेवा हो जाए। इस प्रकार मन का भाव (motive or intention) और लग्न (motivation) भी कर्म के फल को कई गुणा करने में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य (Factor) है।

कर्म-फल का फार्मूला

ऊपर के सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अब हम मोटे रूप से यह निष्कर्ष निकालेंगे कि कर्म फल को जानने का फार्मूला क्या है? यदि हम कर्म फल को 'फ' अक्षर से त्याग को 'त्' से, दानी-महादानी वृत्ति को 'द' अक्षर से, मनोभाव (motive) को 'म' अक्षर से और लग्न (motivation) को 'ल' अक्षर से अंकित करें तो यह फ़ार्मूला निम्नलिखित होगा:

$$फ = कर्म \times त \times द \times म \times ल$$

अब इनमें से भी हरेक तथ्य (Factor) की अपनी-अपनी पराकाष्ठा अथवा मात्रा अथवा स्टेज होगी अर्थात् किसी का त्याग १० गुणा, किसी का १ गुणा और कोई महादानी होगा, कोई सिर्फ दानी होगा। इसलिए इस फार्मूले को निम्न प्रकार से लिखना ज्यादा अच्छा होगा।

$$फ = कर्म \times त^{३} \times द^{५} \times म^{२} \times ल^{८}$$

ये जो हमने त, द, म, ल के ऊपर अंक दिये हैं, ये हमने कोई से भी दे दिये हैं। इनको देने का हमारा भाव है कि अगर किसी का त्याग ३ कोटि का अथवा ३ गुणा शक्तिवाला होगा तो

उसका फल २ गुणा अथवा १ गुणा त्याग वाले से अधिक होगा। इसी प्रकार यदि किसी की लग्न ७ कोटि (raised to the power ७) की होगी तो उसका फल २ कोटि या ३ कोटि की लग्न वाले की उपेक्षा अधिक होगा।

हम ऊपर बता आये हैं कि त्याग ५ प्रकार का है। दान भी कई प्रकार का है। अत: त, द इत्यादि अक्षर में वे सभी गिनती किये जायेंगे। अत: यदि हम फार्मूले को और विस्तार से लिखना चाहें तो यह फार्मूला निम्नलिखित होगा:

फ (तन + मन + धन + जन आदि के सुख की मात्रा और उसकी अवधि व उसकी श्रेणी) = कर्म × त (विकारों का त्याग + देहाभिमान का त्याग + आसक्ति या ममत्व का त्याग + सिद्धि स्वीकार भाव का त्याग + हदों का त्याग) × द (ज्ञान, योग, गुण, स्नेह तन, मन, धन, समय, शक्ति इत्यादि का दान) × म (सात्विक, राजसिक अथवा तामसिक मनोभाव) × ल (उत्तम, मध्यम या कनिष्ठ)

यदि विकारों के त्याग को **पवित्रता** कहा जाये और उसे '**प**' से सूचित कहा जाय, यदि देहाभिमान के त्याग को **योग** कहा जाय और उसे '**य**' से अंकित किया जाये, यदि प्रन्यासी भाव '**प्र**' से सूचित किया जाय, बेहद के भाव को '**बे**' से सूचित किया जाय, सिद्धि स्वीकार न करने के भाव को '**स**' से सूचित किया जाय तो उपरोक्त फार्मूले को हम निम्नलिखित रूप से भी लिख सकते हैं:

फं = कर्म × (पं + यं + प्रं + बें + सं) × द × म × ल

यह जो ऊपर हमनें फार्मूला दिया है, यह संपूर्ण नहीं है बल्कि मोटे रूप से (roughly) जानने का एक प्रयास मात्र है परंतु इससे इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि किन तथ्यों (Factors) से हमें अपने कर्म का फल कई गुणा होकर मिलता है। अत: उन तथ्यों पर तो हमारा ध्यान जाता ही है।

—जगदीश

राजयोग द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य पृष्ठ १ का शेष

राजयोग एज्युकेशन एवं रिसर्च फाउन्डेशन के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जो लक्ष्य रखा है कि सन् २००० तक सभी को स्वास्थ्य उपलब्ध कराया जा सके एवं इसके लिए पर्याप्त संख्या में अस्पतालों, औषधियों एवं चिकित्सकों की व्यवस्था की योजना चल रही है, लेकिन इस राजयोग अभ्यास के द्वारा व्यक्ति में वह सामर्थ्य आती है जिससे उसे कोई रोग न हो सके। इस ध्यान प्रक्रिया के सहयोग से विश्व स्वास्थ्य संगठन का वह लक्ष्य सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।

जबलपुर के मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. बी.एन. श्रीवास्तव जी ने अपने अनुसंधानों के आधार पर कहा कि अधिकांश रोगों की उत्पत्ति चिंताओं एवं मानसिक तनाव के कारण होती है, जिस प्रकार चिंता एवं भय के कारण व्यक्ति को पेशाब आदि हो जाने की कहावत सर्वमान्य है, तनाव वृद्धि के कारण ही दिल का दौरा पड़ने, हृदयरोग, रक्तचाप, गैस्टिक, एसिडिटी, मधुमेह, जोड़ों के दर्द ही नहीं होते बल्कि प्रसूति रोग एवं बालरोगों का मूल कारण भी यही होता है। विभिन्न अनुसंधानों से देखा गया है कि ध्यान तथा आसनों द्वारा केवल मानसिक ही नहीं अनेक शारीरिक रोगों का निवारण होता है। चिकित्सा के क्षेत्र में इस सहज राजयोग का उपयोग बहुत ही लाभदायक हो सकेगा।

सम्मेलन में अहमदाबाद की डॉ. ब्रह्माकुमारी कोकिला शाह, डॉ. दिनेश भगत, पानीपत के सरकारी सर्जन डॉ. के.एस. आनंद, बम्बई के मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. गिरीश पटेल एवं अन्यान्य प्रसिद्ध चिकित्सकों ने अपने अनुसंधान प्रवचनों में राजयोग द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण सफलता मिलने का दावा किया।

सम्मेलन में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा प्रचारित राजयोग शिक्षा को व्यक्ति की समस्त मानसिक तनाव, हीनभावना, घबराहट, भय आदि से मुक्ति दिलानेवाला एवं उच्च भावना, विश्व प्रेम, मानसिक शांति प्रदान करनेवाला और सभी प्रकार की नशेबाज़ी एवं व्यसनों से मुक्त करनेवाला बताते हुए चिकित्सा विज्ञान में इसे शामिल किये जाने का राज्य एवं केंद्र सरकार से अनुरोध किया गया। तथा सभी अस्पतालों में राजयोग अभ्यास की सुविधाएं उपलब्ध करवाने की मांग की गई।

□□

मीठें बच्चो : जितना तुम माया का तिरस्कार करोगे उतना भक्तों द्वारा या दैवी परिवार द्वारा सत्कार प्राप्त करोगे।

"स्मृति- स्वरूप व नष्टो मोहा"

□ब्र.कु. सूरज कुमार, माउंट आबू

संपूर्ण गीता ज्ञान का सार तीन शब्दों में समा गया है—नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धा और गत संदेहः । और इस प्रकार दिखाया है कि अर्जुन, "विजय के निश्चय" के साथ युद्ध के लिए तैयार हो जाता है । उसने दिव्य दृष्टि से यह देख लिया कि भगवान् स्वयं महाकाल बनकर आये हैं, यह महाविनाश का काल है, मेरे युद्ध न करने पर भी ये सब मारे ही जाएंगे । इस दिव्य-दर्शन से उसके मन में उत्पन्न "मैं-पन" के कारण मोह नष्ट हो गया और उसे भविष्य की स्मृतियां आ गईं ।

ठीक वही स्थिति हम सबके सम्मुख प्रत्यक्ष है । हमें भी परमपिता परमात्मा ने अनेक साक्षात्कार कराकर यह स्पष्ट कर दिया है कि मैं महाकाल बनकर अब इस धरा पर अवतरित हुआ हूं । ये महाविनाश का समय है । जिसे तुम 'मेरा' कहते हो, वो सब-कुछ तुम्हारा देह सहित नष्ट होनेवाला है । अतः यदि नष्ट होने से पूर्व ही उससे ममत्व नष्ट हो गया होगा, तो उसे नष्ट होता देख हमें कष्ट नहीं होगा ।

हमने अर्जुन की ही तरह सम्मुख गीता-ज्ञान सुना । सर्वज्ञ परमात्मा ने हमें हमारे आदि व अनादि स्वरूप की याद दिलाइ । एक बार नहीं, हजारों बार... क्या हमें स्मृति आ गई ? क्या हम मन से अर्जुन की तरह ही यह कह सकते हैं कि भगवन् ! हमें संपूर्ण स्मृति आ गई है कि "हम क्या थे... हम क्या हैं और हम क्या होंगे..." हमें स्मृति आ गई है कि अब हमारी वापसी यात्रा (Return Journey) है ? क्या हमें स्मृति आ गई है कि ये संसार एक नाटक है... ? क्या हमें स्मृति आ गई है कि विष्णु-स्वरूप, शिव-शक्ति स्वरूप, पूज्य देवी-देवताओं का स्वरूप हमारा ही है ? इस प्रकार अंतर्मुखी होकर हमें पूछना है कि सर्वज्ञ परमात्मा ने जो-जो हमें याद दिलाया, वो हमें कहां तक याद आ गया है ।

स्मृति-स्वरूप की स्थिति क्या है ?

आध्यात्म-पथ को आनंदित करने के लिए और राजयोग में संपूर्णता प्राप्ति के लिए तथा सर्वोच्च लक्ष्य को सरलता से पाने के लिए स्मृति-स्वरूप होना परम आवश्यक है । इसके लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है—

मान लो, आप भारतीय इतिहास के कुछ वीरों के लिए अति स्नेह व सम्मान की भावना रखते हैं, जैसे वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, महारानी लक्ष्मीबाई या मीराबाई । उनके त्याग, बलिदान व चरित्र की अनेक गाथाएं आपने सुनी हैं । और यदि कोई प्रसिद्ध ज्योतिषी, जिस पर आपका संपूर्ण विश्वास हो, आपको आकर यह बता दे कि जिस महाराणा प्रताप से आप बहुत प्यार रखते हो, "वह तुम ही तो थे" । तो अब सोचो, यह सुनते ही क्या होगा... ?

यह विश्वास होते ही कि मैं ही वह देशभक्त, स्वाभिमानी, अपनी प्रतिज्ञा पर मिटनेवाला, चरित्रवान, त्यागी व महाबली प्रतापथा, जिसने हिंदु धर्म की रक्षा में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया—आपके वर्तमान स्वरूप में महाराणा प्रताप झलकने लगेगा... उसके सभी गुण तेजी-से आप में उभरने लगेंगे... आपका मनोबल व आत्म-विश्वास आसमान छूने लगेगा और कभीकभी अपनी ही गाथाओं की स्मृति में आप मग्न हो जाया करेंगे ।

प्रत्यक्ष उदाहरण

यही बात सन् १९३६-३७-३८ में प्रत्यक्ष रूप से ब्रह्मा बाबा के जीवन में देखी गई । जैसे ही उन्हें ईश्वरीय वाणी सुनाई दी कि जिस नारायण की तुम रात-दिन पूजा करते हो, "वह तुम ही थे" । जिस श्रीकृष्ण की महिमा में शास्त्र भरे पड़े हैं, अपने प्रथम जन्म में तुम ही वह पूज्य श्रीकृष्ण थे ।

और जैसे ही उन्हें अपने आदि स्वरूप की स्मृति आई कि—"मैं ही श्रीकृष्ण था", वे स्मृति-स्वरूप हो गये । वे मग्न हो गये अपने ही अतीत के चरित्रों में । और हमनें देखा कि वे उस स्मृति में इतने मग्न हो गये कि देखनेवालों को उनकी जगह पर श्रीकृष्ण ही दिखाई देने लगा । उनका वर्तमान स्वरूप लोप हो गया और सबको उनसे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार होने लगा । ये है स्मृति-स्वरूप होना ?

और परिणामतः श्रीकृष्ण की दिव्यता उनमें समाने लगी । संपूर्ण पवित्रता के वे साक्षात् स्वरूप बन गये, दिव्य गुणों की वे प्रतिमूर्ति बन गये, उनका लौकिकपन व मोह सदा के लिए समाप्त हो गया ।

हम भी स्मृति-स्वरूप बनें

अब आवश्यकता है, विश्व को सत्य का साक्षात्कार कराने के लिए, हम अपने

मूल-स्वरूप की स्मृतियों को जागृत करें। अंतर्मुखी होकर विचार करें कि एक ज्योतिषी की बात पर तो हम विश्वास कर सकते हैं तो सर्वज्ञ परमात्मा की बात पर हमें विश्वास क्यों नहीं ?

● उन्होंने हमें याद दिलाया कि, "शास्त्रों में प्रसिद्ध असुर संहारिणी शिव-शक्तियां तुम ही हो"—तो हमें यह स्मृति कहां तक जागृत हुई है ?

● उन्होंने हमें याद दिलाया कि तुम ही ये देवी-देवता थे और तुम्हें ही अगले जन्म में देवता बनना है—तो हमें अपने इस दिव्य-स्वरूप की स्मृति कहां तक आई है ?

● उन्होंने हमें याद दिलाया कि 'संपूर्ण-पवित्रता' तुम्हारा ही स्वरूप है, तुमने कल्पकल्प इसे धारण किया है।

● जिन्हें भक्त मंदिरों में विघ्न-विनाशक देवियां मानकर, वरदान लेने जाते हैं, वे तुम ही हो।

● सर्वप्रथम तो हमारे परमपिता ने हमें यह ही स्मृति दिलाई कि तुम यह नहीं हो जो तुम देख रहे हो और मैं तुम्हारे साथ हूं, मैं तुम्हारा हूं, तुम डरो नहीं चिंता नहीं करो, विजय तुम्हारी ही है।

● तुमने कल्पकल्प अनेक बार माया को जीता है, तुम ही विजयी रत्न हो। तुम इस जग के नूर हो, तुम्हारे कारण ही जग स्थिर है।

इस प्रकार वर्तमान, भूत व भविष्य की अनेक स्मृतियां दिलाकर वे हमारा स्वमान जगाते हैं। इस स्वमान में स्थित होने से सहज ही संस्कार दिव्य हो जाते हैं, हमें अपनी शक्तियों का आभास हो जाता है, और हम शक्तिशाली, सम्पन्न व संपूर्ण बन जाते हैं।

स्मृति आने से स्वरूप बनते हैं.

यदि हमें २० वर्ष पूर्व की किसी दुखद घटना की याद आ जाए तो क्या होगा ? दुख से हमारे नयन भर आयेंगे। इसी प्रकार किसी भी सुखद घटना की याद आते ही हमारा स्वरूप खुशी-से खिल उठेगा। अर्थात् स्पष्ट है कि स्मृति आते ही हम स्वरूप बन जाते हैं।

इस प्रकार जो स्मृतियां हमें हमारे परमपिता ने दिलाई, उन्हें हम मन से स्वीकार कर लें। जितनी जितनी शक्ति-शाली हमारी स्मृति होगी, उतनी ही तीव्रता से वे सब दिव्य लक्षण हमारे वर्तमान स्वरूप में प्रत्यक्ष होने लगेंगे। इससे ही रूह-रिहान का सर्वश्रेष्ठ आनंद हमें प्राप्त होगा। और वास्तव में जितनी समर्थ हमारी स्मृति होगी, वैसा ही स्वरूप दूसरों को भी हमारा दिखाई देगा।

नष्टोमोहः स्थिति

मोह एक ऐसा सूक्ष्म रोग है, जिसका समझ पाना भी साधारण मनुष्य के लिए कठिन है। कहीं मनुष्य इसे आवश्यक समझकर बुद्धि पर अज्ञान का पर्दा डाल लेता है तो कहीं प्राणी मोहवश मलीन बुद्धि हुआ इसे प्रेम समझकर जीवन का आधार मान लेता है। परंतु वास्तव में है यह दुखों और चिंताओं का मूल। मुख्य रूप से मोह के ४ स्वरूप हैं—स्वयं की देह से मोह, सम्बंधियों से मोह, पदार्थों से मोह व कर्मों से मोह।

मैं-पन—मोह का मूल

हम जरा विचार तो करें... जब हम आये थे तो क्या क्या साथ में लाये थे ? कुछ भी नहीं। और जो कुछ लाये थे वो नष्ट हो चुका। बाकी तो ये देह भी प्रकृति से मिला, बड़े हुए, सम्बंध जुड़े, संपत्ति बढ़ी, मेरा-पन बढ़ा और आत्मा मोहजाल में जकड़ी गई और इस मोह के कारण सम्बंधों व संपत्ति का सच्चा सुख भी नहीं ले सकी।

परंतु अंतर्मुखी होकर देखने से लगेगा कि मेरा है क्या... आंख बंद होते ही सर्वस्व पराया... जिन्हें अपने कहते हैं वे भी पराये। मरणोपरांत क्यों, जीते जी ही, वर्तमान युग में अपने कहलानेवाले कितने अपने हैं ? जब तक स्वार्थ सिद्ध हो रहा है, सब अपने हैं और जब विपत्ति आई तो अनुभव हो जाता है कि धन, संपत्ति, मनुष्य सब पराये हैं।

इसलिए हे योगियो,—"जिन्हें तुम अपना कह रहे हो, वे तुम्हारे हैं कहां..." और क्या किसी योगी को किसी मनुष्य को अपना कहना शोभता भी है... ? योगी का तो एक ईश्वर ही सब-कुछ होता है। और धन, संपत्ति—ये तो योगी के लिए मिट्टी समान ही होते हैं। इस प्रकार जहां मैं-पन और मेरापन है, वहीं मोह है और यह मोह ही विनाशकाल में प्राणियों के लिए भयंकर दुखदाई सिद्ध होगा। अतः सभी को शांति का दान देनेवाले योगियों को विनाश से पूर्व ही नष्टोमोहा बन जाना चाहिए।

अब कहीं भी मोह पैदा न हो।

'मोह' राजयोगियों का अंतिम पेपर होगा। मोह मनुष्य की एक स्वाभाविक-सी प्रवृत्ति बन गया है। जो वस्तु उसके पास आती है, जो व्यक्ति कुछ भी दिन उसके साथ रहता है, जो मनुष्य समय पर सहयोग देता है, जो व्यक्ति बहुत अच्छा लगता है, उससे तुरंत मोह हो जाता है। यह वृत्ति अंत में बहुत नुकसानकारक होगी। अतः अब हमें यह अभ्यास करना चाहिए कि हम "फर्ज" समझकर दूसरों के साथ व्यवहार में आयें तो यह मोह का मर्ज समाप्त हो जायेगा। आत्मा के सदा साथ रहनेवाली उसकी सबसे प्रिय वस्तु यह देह है, इससे उसका मोह होना स्वाभाविक है। अब हमें इस देह की पालना करते हुए भी, इससे प्यार रखते हुए भी इससे निर्मोही होना है। यह मोह समाप्त होते ही सब मोह समाप्त हो जाएंगे।

मोह से मुश्किलातें...

मोह मनुष्य को उदास और चिंतित करता है । अनेक परेशानियों व विघ्नों का कारण भी मोह है । मोहवश मनुष्य की बहुतसी सूक्ष्म शक्तियां व्यर्थ जाती हैं । मोह मानो अनेक समस्याओं का आह्वान करता है । योगपथ में मोह एक महान् रोग है । ऐसा रोगी सदा ही मन में भारीपन का अनुभव करता है । मोह इसे बारबार धरा की ओर आकर्षित करता है, उसे ईश्वरीय खुशी और स्वमान के महान् नशे से दूर ले जाता है । पारिवारिक जीवन में मां-बाप का मोह अनेक जगह बच्चों के विकास में बाधक होता है ।

स्मृति-स्वरूप से ही नष्टोमोहा

हमारी ५००० वर्ष की कल्प की यात्रा अब समाप्ति की ओर है । इस यात्रा में हमनें अनेक देह रूपी वस्त्र पहने, अनेक साथी हमारे साथ आये, अनेक वैभव हमें प्राप्त हुए और सब-कुछ छोड़ते हुए हम चले आ रहे हैं । वर्तमान के सम्बंधी तो हमारे अंतिम साथी हैं । इन्हें भी वैसे ही छोड़कर हमें चले जाना है । यात्रा के अंत में स्वयं ईश्वर हमारा सच्चा साथी बना है ।

अब हमें वहीं जाना है, जहां से हमने यात्रा शुरू की थी । इस प्रकार जितनी-जितनी हमें हमारे सत्य स्वरूप की व घर जाने की स्मृति दृढ़ होती है, असत्य मोह विलीन होता है । मोह से होगा भी क्या ? खुशी का दमन, शांति में भंग, बुद्धि में भारीपन । तो क्यों न हम महाविनाश से पूर्व निर्मोही बनें ताकि विनाशकाल में सबकुछ नष्ट होता देखकर, सबको मरते देखकर, हम एक मनोरंजक नाटक को देखने की तरह आनंदित हों ।

निर्मोही परंतु प्रेम-स्वरूप बनें

निर्मोही बनने का अर्थ जीवन में रूखापन लाना नहीं है । जैसे भगवान् संपूर्ण निर्मोही भी है और प्यार का सागर भी है । वह आत्माओं की प्यार से पालना भी करते हैं और निर्मोही भी रहते हैं । वैसे ही हम भी परिवारजनों की कर्तव्य समझकर प्यार से पालना भी करें परंतु निर्मोही भी बनें । योगियों के जीवन में इन दोनों का समन्वय ही महानता है और सर्वोच्च स्थिति पर जाने का आधार है ।

इसी प्रकार धन, संपत्ति जो आज हमारे पास है, कल नहीं होगी । वास्तव में जो लोग लक्ष्मी का दुरुपयोग करते हैं वह उन्हें छोड़ जाती है । इस प्रकार संपूर्ण अनासक्त होकर कर्म करने से ही कर्मों में दिव्यता आती है ।

इसलिए हे सृष्टि पर अवतरित महान् आत्माओं—अब अपने अवतरित स्वरूप को प्रत्यक्ष करो । आनेवाले हाहाकार के काल में स्मृति-स्वरूप होनेवाली आत्माएं ही भक्तों को सत्य का साक्षात्कार करा सकेंगी और जिनका मोह नष्ट हो गया होगा वे ही दूसरों को शांति का दान देकर, मुक्ति का वरदान दे सकेंगी । अतः अब हद की मोह-वृत्ति छोड़कर बेहद की वृत्ति धारण करें और मेरा तो सर्वस्व एक परमपिता ही है, इस निर्मोही-पन से "फरिश्ता सो देवता" महामंत्र के स्मृति-स्वरूप बनें । □

नेत्र विशेषज्ञ (पृष्ठ ९ का शेष)

खराब होने से राक्षस कहलाता है । आज वह Eye सर्जन जिसको दिव्य-दृष्टि विधाता भी कहा जाता है जो जगहजगह अपने हास्पीटल खोल रहा है तथा अज्ञानता रूपी मोतिया दूर करके ज्ञान रूपी रोशनी दे रहा है । इन अस्पतालों को विधाता ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय नाम दिया है तथा प्रत्येक शहर में ये अस्पताल हैं यदि नहीं तो स्थापना की जा रही है । हमें चाहिए कि इन अस्पतालों में जाकर अपने नजरिये का इलाज करायें जिससे स्वर्ग में स्थान मिल सके । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सेवाकेंद्र उस दिव्य चक्षु विधाता **नेत्र विशेषज्ञ** के अस्पताल ही तो हैं, जहां मनुष्य का नजरिया ठीक कर देवता बनाया जाता है तथा इंसान की इंसानियत को ऊंचा उठाया जाता है । भूली सभी बातें फिर से याद करायी जाती हैं । ऐसे अस्पताल में आपको सादर आमन्त्रित करते हैं । □

शोलापुर में 'शिवप्रकाश भवन' के शिलान्यास के अवसर पर उद्गार प्रकट करती हुई ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी ।

नई शिक्षा नीति

□ब्र.कु. डॉ. हरीश शुक्ल., पाटन

शिक्षा का अर्थ है—शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण, संतुलित एवं सुसंवादिता पूर्ण विकास । कहा गया है "सा विद्या या विमुक्तये"— रोग, शोक जन्य अशांति से मुक्ति दिलानेवाली शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है । यही कारण है कि आज शिक्षा में मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित करने एवं नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को सर्व-सतरों पर देने की सांप्रत समाज की पुकार उठ रही है । लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारी शिक्षा नीति में इस प्रकार की सर्व-सम्मत कोई समायोजना नहीं ।

आज जब नई शिक्षा नीति का भारत में प्रारंभ हो रहा है और २१वीं सदी की सुख, सुविधा और संपन्नता का लक्ष्य निर्धारित हो रहा है तब शिक्षा में व्यवसाय लक्षिता, स्वाश्रय, देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, महिला उत्थान एवं ग्राम्य-अभिमुखता के साथ-साथ आत्मोन्नति द्वारा सर्वतोमुखी विकास की दिशा सुनिश्चित करना भी नितांत आवश्यक है । मात्र भौतिक प्रगति मानव का सर्वांगीण विकास साधकर सच्ची शांति, शाश्वत सुख एवं प्रेम पूर्ण बंधुत्व की भावना पैदा नहीं कर सकती । हमारे साम्प्रत प्रश्न—धर्म, भाषा, जाति, वर्ण तथा प्रांत भेद मिटाने में आज की शिक्षा सफलता प्राप्त करेगी, ऐसा विश्वास पूर्वक कहा नहीं जा सकता ।

मानव मानव के बीच पारस्परिक स्नेह एवं सम्मानपूर्ण सम्बंधों की प्रस्थापना आध्यात्मिकता द्वारा संभव है । आध्यात्मिकता का संबंध किसी धर्म या संप्रदाय विशेष से नहीं अपितु आत्मबोध से है जिससे सारी मानवता उत्कर्ष प्राप्त कर सकती है ।

शिक्षा का उद्देश्य सुखी, संपन्न एवं स्वस्थ समाज के लिए स्वयं के संस्कारों का परिवर्तन करना है । शिक्षा में चरित्र उत्थान, व्यक्तित्व विकास, संस्कार-सिंचन, सद्‌गुणों की धारणा, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व स्वीकार और मानव का दिव्यीकरण अनिवार्य बन जाता है । भारत की प्राचीन समुन्नत सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा हेतु जन-जागृति, सामाजिक अंध-विश्वासों-कुरीतियों का उन्मूलन, निरक्षरता निवारण, अनेकता में एकता के भावात्मक सूत्र द्वारा राष्ट्र की अखंडता की रक्षा तथा मानव मात्र की सुसुप्त शक्तियों के विकास का अवसर देना—वास्तव में शिक्षा का लक्ष्य हो सकता है । इसके लिए मात्र विद्यार्थी नहीं अध्यापकों को भी प्रशिक्षण देने की अनिवार्यता सविशेष है । जब तक अध्यापकों का जीवन-आदर्श एवं उदाहरण-रूप नहीं बनेगा, तब तक बच्चों की सुसंस्कारिता जग नहीं सकती । अतः नई शिक्षा नीति में बच्चों के साथ उनके अध्यापकों एवं अभिभावकों को भी केंद्र में रखना अनिवार्य है ।

नई शिक्षा नीति में मॉडल-स्कूलों एवं ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना द्वारा शिक्षा के ढांचे को बदलने का ख्याल रखा गया है । इस दृष्टि से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का योगदान सराहनीय है । इस विश्वविद्यालय द्वारा परोक्ष एवं प्रत्यक्षतः उक्त नई शिक्षा नीति के उद्देश्य परिपूर्ण करने के पिछले ५० वर्षों से अनेक नव्य प्रयोग हो रहे हैं । मानव चरित्र उत्थान, बाल-युवा-उत्कर्ष, महिला-जागृति, अस्पृश्यता निवारण, भावात्मक एकता, मानव व्यक्तित्व विकास, संस्कार सिंचन एवं परिवर्तन के बहुमुखी नव्य शैक्षणिक प्रयोगों द्वारा विश्वशांति एवं मानव अभ्युदय की दिशा में इस संस्था के सफल एवं यशस्वी प्रयोगों का परीक्षण कर संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसे अपने एन.जी.ओ. की सदस्यता प्रदान की है तथा सामाजिक एवं आर्थिक परिषद के सलाहकार के रूप में नियुक्ति भी ।

ईश्वरीय विश्वविद्यालय के विश्व में ५० देशों में व्याप्त अपने १६०० सेवाकेंद्रों द्वारा नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की परिपूर्ति हेतु विश्वशांति सम्मेलन, युवा उत्थान कार्यक्रम, शिक्षा सम्मेलन, बाल-युवा नेतृत्व आध्यात्मिक शिविर, दृश्य-श्रव्य शैक्षणिक कार्यक्रम, व्यसन मुक्ति आंदोलन, पद यात्राएं, ग्राम्य विकास आदि के असंख्य कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित हो रहे हैं जिसमें संपूर्ण मानवता लाभान्वित हो रही है ।

२५ मई, १९८६ से ३१ मई, १९८६ तक **माउंट आबू** स्थित इस विश्व-विद्यालय के मुख्यालय में बाल-युवा नेतृत्व एवं आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें अखिल भारत से करीब ७०० बालकों-युवाओं ने तथा १०० अध्यापकों ने सहर्ष भाग लिया । इस उपलक्ष्य में "मानव विकास के लिए शिक्षा" सम्मेलन का आयोजन भी हुआ,

जिसका उद्घाटन उड़ीसा राज्य के वित्त एवं विधिमंत्री माननीय गंगाधर महापात्र जी ने किया । इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों से विद्वान, शिक्षाविद् भी उपस्थित थे जिनमें गुजरात के नई शिक्षा नीति के डॉयरेक्टर प्रि. घनश्याम भाई पारीख जी एवं डॉ. गोवर्धन डी. शर्मा जी ने अपने विचार-विमर्श द्वारा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण की सराहना की तथा सम्मेलन की फलश्रुति रूप निम्न प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पारित किया:—

शिक्षा प्रस्ताव

देश के कोने-कोने से आए किशोर-किशोरियों, अध्यापक भाई-बहनों और शिक्षाविदों की यह सभा, "मानव उत्थान के लिए शिक्षा" विषयक परिसंवाद में हुई गंभीर चर्चा, विचार-विनिमय और चिंतन के बाद सर्व सम्मति से केंद्रीय तथा राज्य सरकारों से साग्रह अनुरोध करती है कि नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन, शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य को अर्थवान और गतिशील बनाने के लिए मानवीय मूल्यों, उच्च आदर्शों, भारतीय सांस्कृतिक महत्ता, नैतिकता, आध्यात्मिकता आदि के प्रति समर्पित स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग लिया जाय, शिक्षा प्रसार में महिलाओं का योगदान अधिकसेअधिक लिया जाय तथा सामाजिक कुरीतियों को निर्मूलित करने में शिक्षा का सहयोग लिया जाय ।

नई शिक्षा नीति में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाय । राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण, व्यक्ति के आत्मविकास और भावात्मक एकता के क्षेत्र में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पिछले ५० वर्षों से निरंतर कार्यशील रहा है । राष्ट्र विकास और मानव गरिमा को उच्चतम भाव भूमि पर प्रस्थापित करने की दृष्टि से नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में उसकी सेवाओं का उपयोग लिया जाय ।

उक्त बाल-युवा नेतृत्व आध्यात्मिक सम्मेलन में निम्न विषयों पर प्रशांत एवं उत्साहप्रद वातावरण में धारणायुक्त राजयोगी भाई-बहनों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया—विश्वशांति में बाल-युवाओं का योगदान, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य एवं योग, दिव्य जीवन के लिए राजयोग, स्वर्णिम युग के लिए स्वर्णिम संकल्प, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए शिक्षा, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा, शांति की शक्ति, राजयोग अभ्यास, २१वीं सदी का भारत, व्यक्तित्व विकास के लिए शिक्षा, शिक्षा में नारियों का योगदान, अनेकता में एकता, धर्म का मर्म, युवा और भारत एकता, नेतृत्व शक्ति और युवा; राजयोग द्वारा गहन शक्ति की अनुभूति आदि । इसके साथ ही शैक्षणिक पर्यटन, खेलकूद एवं **आबू** के दर्शनीय स्थानों को देखने के भी कार्यक्रम रहे । रात्रि में शैक्षणिक मनोरंजन के भी कार्यक्रम आकर्षक एवं कलापूर्ण रहे ।

उक्त कार्यक्रम का समापन गुजरात के मार्ग एवं मकान तथा समाज सुरक्षा के मंत्री भ्राता **दौलतराम परमार** जी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें उन्होंने भी ऐसी स्वैच्छिक आध्यात्मिक एवं असाम्प्रदायिक संस्थाओं से प्रेरणा एवं सहयोग लेकर नई शिक्षा नीति के गठन की ओर इशारा किया तथा इस संस्था के शैक्षणिक कार्यों की प्रशंसा की । ३१ मई रात्रि में राजस्थान के माननीय महामहिम राज्यपाल जी से भी बालकों एवं युवाओं की मुलाकात उत्साहित करनेवाली एवं प्रेरणादायी रही । □

नेत्र विशेषज्ञ

□ब्र.कु. प्रेम प्रकाश., डेरावसी

आजकल संसार में अंधेपन को दूर करने का अभियान चल रहा है, इसके अंतर्गत जगहजगह पर '**नेत्र शिविर**' लगाये जा रहे हैं । आंखों के अस्पताल खोले जा रहे हैं ताकि अंधेपन पर काबू पाया जा सके । भारत सरकार ही नहीं, बल्कि सभी देशों की सरकारें इस अभियान पर अथाह धन खर्च कर रही हैं । अंधापन एक ऐसी बीमारी है जिसमें आंख की रोशनी चली जाती है तथा इंसान के चारों तरफ अंधेरा छा जाता है और मनुष्य को अनेक प्रकार की ठोकरें खानी पड़ती हैं । संसार में दो चीज बहुत महत्त्वपूर्ण हैं एक नजर तथा दूसरा नजरिया । जिस प्रकार नजर के खराब हो जाने से इंसान ठोकरें खाता है, उसी प्रकार नजरिया खराब हो जाने से इंसानियत ठोकरें खाती है । नजरिया खराब अर्थात् अज्ञानी—अज्ञानी मनुष्य उस समय होता है जब वह कुछ भूल जाता है । आज मनुष्य खुद को भूल गया है कि मैं कौन हूं । घरघर में क्लेश, भाई-भाई को नहीं देख सकता । अनेक धर्म होने के बाद भी केवल नाम मात्र हैं जिनकी आड़ लेकर भाईभाई का खून कर रहा है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश होकर मनुष्य का नजरिया इतना खराब हो गया है कि मां बहन को भी नहीं पहचान रहा तथा अमृत को छोड़कर विष पीने लगा है । बेरहम, अहंकारी होकर वह बड़े-से-बड़ा पाप करने से भी नहीं डरता । यहां तक कि भगवान् को भी अनेक गालियां निकालता है ।

जब मनुष्य का नजरिया ठीक होता है तो वह देवता कहलाता है तथा नजरिया

(शेष पृष्ठ ७ पर)

"निरअहंकारिता सर्वोच्च सत्ता की"

□ब्र.कु. उर्मिला., कुरूक्षेत्र

सर्व कल्याणकारी परमपिता शिव जहां कोटि-कोटि गुणों के भंडार हैं वहां उनकी निरअहंकारिता देखकर हृदय में श्रद्धा और भावना का स्रोत फूट पड़ता है और स्वयं का अहम् भाव बर्फ की तरह पिघलने लगता है । कितनी निरअहंकारिता है उसके पृथ्वी पर अवतरित होने में ? दयार्द्र हृदय वह सर्वोच्च सत्ता धरती के प्राणियों की दुखभरी पुकार सुनकर आने में जरा भी देरी नहीं करता । आज के जमाने में किसी मनुष्य के पास अगर थोड़ा-सा भी पद पैसा है और कोई उसे बुलाता है तो अनेक प्रकार की जांचपड़ताल करने के बाद ही वह मिलने आता है । कौन बुला रहा है, बुलानेवाले का स्तर कैसा है ? क्या काम करता है आदि आदि । और जब देखता है बुलाने वाले ने मैले-कुचैले कपड़े पहने हैं और कोई साधारण गरीब दुखी आदमी है तो नौकर से ही कहलवा देता है कि साहब घर में नहीं हैं । परंतु वह सृष्टि का मालिक पृथ्वी पर अवतरित होता भी है तो किसकी पुकार पर ? कलियुग के अंत की पतित विकारी और कलाहीन आत्माओं की पुकार पर । पृथ्वी पर आने से पहले वह एक बार भी तो नहीं देखता कि उसे बुलानेवाले कैसे पतित हैं, कैसे विकारी हैं, कैसी-कैसी आदतों के गुलाम हैं और कैसी उनकी दृष्टि-वृत्ति है । नहीं, बस पुकार का दीवाना हुआ वह अपना घर छोड़कर उसी प्रकार दौड़ा आता है जैसे रोते बच्चे की आवाज सुनकर मां भागी आती है ।

और पृथ्वी पर आकर वह जिस तन को अपनी गद्दी बनाता है उससे उसकी निरअहंकारिता अत्यंत उज्ज्वल रूप से हमारे सामने आ जाती है । आजकल की कथित महान् आत्माएं जो केवल एक जन्म में शरीर की पवित्रता धारण करते हैं, कहीं भी जाते हैं तो पहले बैठने के स्थान का निरीक्षण करते हैं । मेरी गद्दी कहां है और कैसी है तथा इसी गद्दी के सबसे उच्च और सजीसंवरी न होने पर उनमें तूं तूं... मैं-मैं.. हो जाती है । परंतु (ever pure) सम्पूर्ण पावन परमपिता परमात्मा गद्दी भी बनाता है तो किसे ? कलियुग के अंत के अति तमोप्रधान तत्वों से बने विकारी तन को, जो अत्यंत साधारण और वृद्ध है । दिल में आता है । उस अमूल्य हीरे के लिए तो सोने की डिब्बी होनी चाहिए, अर्थात् उसे सतयुगी देवताओं जैसा सतोप्रधान तन आधार रूप में मिलना चाहिए । परंतु बाप को इसकी चाहना नहीं वह परम निरअहंकारी, निःस्वार्थ पिता परमात्मा सृष्टि परिवर्तन का इतना बड़ा कार्य बड़े गुप्त रूप से संपन्न कर पुनः अपने घर पहुंच जाता है ।

साधारण तन को अपना आधार बना, साधारण रूप से साधारण गरीब बच्चों के बीच में बैठकर वह सृष्टि के आदि मध्य अंत के गुहय राजों को खोल देता है । कोई साज-सज्जा नहीं, कोई दिखावा नहीं । आज अगर किसी वक्ता को वक्तव्य देने के लिए बुलाया जाता है, जो इसी दुनिया का छुटपुट ज्ञान देनेवाला होता है उसके लिए भी कितनी तैयारियां, साज-सज्जा की जाती हैं । परंतु वह सर्वोच्च बाप तीनों लोकों, तीनों कालों और मानव मात्र की मनोवैज्ञानिक स्थितियों का बड़े सूक्ष्म ढंग से विश्लेषण कर जाता है पर एक बार भी नहीं कहता कि मैं बोला, या अच्छा बोला या मैंने इतना ज्ञान दिया या इतना ज्ञान देने के बाद मुझे बदले में या सम्मान में यह चाहिए । बड़े साधारण ढंग से वह बस इतना ही कहता है बच्चो ! "ड्रामा में मुझे तो यह पार्ट मिला हुआ है मैं क्या करता हूं, ड्रामा में जो नूंध है वही कल्प-कल्प दोहराई जा रही है ।" परंतु अल्पज्ञ और नासमझ मनुष्य आत्माएं उसी ज्ञान सागर द्वारा दिए गए ज्ञानमोतियों के भंडार में से एक-दो मोती चुनकर अगर जरा सा अच्छा बोल लेती हैं या लिख लेती हैं तो थोड़े अहंकारवश कह ही देती हैं—"मैं अच्छा बोला", "मैंने बड़ा अच्छा भाषण किया या "मैं बड़ा अच्छा लिखता हूं !" लेकिन अनुभव कहता है यह भावना तभी आती है जब हम उस परम् पवित्र ज्ञान सागर की स्नेहभरी, निरअहंकारी, निःस्वार्थ सेवा को भूल जाते हैं ।

जहां वह बच्चों के आगे ज्ञान के अमूल्य भंडार खोलता है, वहां वह अपने बच्चों को सिर आंखों पर भी बैठाता है । बड़े सहज भाव से बच्चों को झुककर नमस्ते और सलाम करता है ।

दुनिया में हम देखते हैं जो किसी से रिश्ते में, पद में, ज्ञान में, धन में या अन्य किसी भी दृष्टिकोण से बड़ा होता है तो पहले नमस्ते या सलाम करने से कतराता है। यहां तक कि ज्ञानमार्ग पर चलनेवाली आत्माएं भी जिनकी ज्ञान योग की स्थिति थोड़ी ठीक हो, या जो कलास करवाने के निमित्त बनी हों, वह भी कई बार आश\ करने लग जाती हैं कि दूसरे ही उसे पहले ओमशांति करें। परंतु यहां वो आत्माएं इस बात को ध्यान में नहीं रखती कि जो जितना उच्च होता है वह उतना ही निरअहंकारी होता है क्योंकि अहंकार होता ही छोटों में है अतः अपने घमंड से वह अपने छोटेपन को ही सिद्ध कर रहे हैं। नहीं तो सर्वोच्च सत्ता की तरफ अगर नजर उठाकर देखें तो वह उन्हें अपने से छोटों को मालिक बनाकर उन्हें सलाम करती दिखाई देगी और इन हृदयस्पर्शी क्षणों को तीसरे नेत्र के सामने लाने पर उन आत्माओं का अपना अहंकार चूरचूर हो जायेगा। कहां तक वर्णन करें उसकी निरअहंकारिता का। इससे बड़ा उसका गुप्त रहना और क्या होगा जो वह धरती पर आया बैठा है और किसी को पता भी नहीं यह वही है। कमाल है उस हृदयेश्वर के सब कुछ करते हुए भी न करने के भान की भावना जो ६३ जन्मों के हमारे अहंकार के संस्कार को सैकिंड में तिरोहित कर देती है। □

शिव का कारोबार

□ले.-रा.प्र. शर्मा., नयी दिल्ली

न भय है न विकल्प न चिन्ता-गुबार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

महबूब दे रहा है, आदियुग का वास्ता।
उस शुद्ध मुक्त स्वर्ग के जीवन का वास्ता।।
जिसका न कोई पार कल्प भर में पा सका।
वह शिव स्वयं दिखा रहा संतयुग का रास्ता।।

सब सत्य दिये खोल, न जिनका शुमार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

है सूक्ष्म ज्योति-बिन्दु और है सूत्रधार भी।
कर्मों से परे है मगर कर्मों का सार भी।।
जीवन-रहित स्वयं है, पर जीवन का तार भी।
साकार नहीं किन्तु है साकार-कार भी।।

नव-सृष्टि रच रहा वही जो निराकार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

अफसोस गम व दुःख के जमाने चले गये।
कामादि शत्रुओं के ठिकाने चले गये।।
मंजिल मिली तो अन्य निशाने चले गये।
शिव मिल गया तो सब सनम खाने चले गये।।

निर्मल सलिल-प्रवाह है, शीतल-बयार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

सम्पूर्णता की ओर अब ले जा रहे हैं शिव।
इतिहास सत्य, सृष्टि का बतला रहे हैं शिव।।
'हो ज्योति-बिन्दु आत्मा' समझा रहे हैं शिव।
सृष्टि के चक्र-व्यूह को दिखला रहे हैं शिव।।

श्रीमत् की धारणा ही विश्व का सिंगार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

आने को तो आयेंगे रोग-शोक सामने।
कर्मों के ये प्रतिबिम्ब बनेंगे ही पाहुने।।
उनसे न प्रभावित मगर होंगे ये सयाने।
हैं शक्ति-रूप गा रहे जो शिव के तराने।।

सद्-ज्ञान-खड्ग हाथ है और योग धार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार है।।

जो हैं अधम पतित उन्हें पावन बना रहे।
शिव ज्ञान-दृष्टि से सुमन सूखे खिला रहे।।
अभिशप्त को वरदान के झूले झुला रहे।
क्या खूब! कि गदा को शाह-पद दिला रहे।।

हैं बेमिसाल शिव का यह जो कारोबार है।
ब्रह्मा के वत्स के लिये प्रति पल बहार

राजयोग के लिए परमात्मा का परिचय

राजयोग का सही अर्थ है आत्मा का परमपिता परमात्मा के साथ सम्बंध अथवा मिलन। इस मिलन द्वारा आत्मा को परमात्मा से सर्व प्रकार के गुणों और शक्तियों की प्राप्ति होती है। आत्मा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के बाद राजयोगी को यह जानना अति आवश्यक होगा कि परमात्मा कौन है ? जिसके साथ योगी आत्मा को योग लगाना है या सम्बंध जोड़ना है।

आज प्रत्येक व्यक्ति की यह शिकायत है कि ईश्वर का ध्यान करते समय उसका मन भटकता रहता है या एकाग्र नहीं हो पाता है। इस तरह की शिकायत मनुष्य के साथ योग लगाने की बात में कभी नहीं होती है। कोई भी पत्नी यह शिकायत नहीं करेगी कि जब अपने पति को याद करती है तब उसका मन भटकता रहता है। कोई भी बच्चा यह कभी नहीं कहेगा कि वह अपने पिता में अपना मन एकाग्र नहीं कर सकता है। तब फिर यह शिकायत परमात्मा के लिए क्यों है ? एक तरफ परमात्मा को माता-पिता कहकर याद किया जाता है, उनके साथ सर्व सम्बंधों का भी वर्णन किया जाता है—

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव।
त्वमेव सर्वम् मम देव-देव।

यह परमात्मा की ही तो महिमा में गाया जाता है। लेकिन दूसरी तरफ फिर यह भी शिकायत बनी रहती है कि ईश्वर में मन नहीं लगता है। इसका मूल कारण यही है कि परमात्मा के साथ सम्बंध की पूरी अनुभूति नहीं। एक पत्नी को अपने पति का पूरा परिचय है या बच्चों को अपने पिता की पूरी पहचान है। लेकिन परमात्मा के विषय में मनुष्य बिल्कुल ही अनभिज्ञ है।

आज परमात्मा के सम्बंध में अनेक मन्तव्य और विश्वास प्रचलित हैं जो प्राय: एक-दो के विरोधी ही हैं। इसी कारण मनुष्य समझ नहीं पाता है कि आखिर परमात्मा कौन है ? यही कारण है कि कई उसके अस्तित्व को ही स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

कोई परमात्मा को नाम रूप से न्यारा मानते हैं तो कोई इस अभिप्राय: के हैं कि सभी ईश्वर के ही नाम-रूप हैं। कोई श्रीकृष्ण, श्रीराम, महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह को परमात्मा का अवतार मानते हैं तो कोई यह स्वीकार ही नहीं करना चाहते हैं कि परमात्मा का कभी अवतार भी होता है। कोई आत्मा को ही परमात्मा मानते हैं, तो कोई आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हैं और कोई आत्मा का परमात्मा से सदा अलग अस्तित्व मानते हैं। कोई तो जगत को मिथ्या और ब्रह्म को सत्य मानते हैं, तो कोई जगत के अन्दर ही प्रकृति को ही ईश्वर का स्वरूप समझते हैं। कोई स्वयं को ईश्वर के नीच या दास सिद्ध करते हैं तो कोई स्वयं को शिवोहम् या भगवान् कहलाकर खुद की ही पूजा करवाते हैं। कोई परमात्मा को हृदय में मानते हैं तो कोई कण-कण में व्यापक समझते हैं और कोई उसका स्थान सातवां आसमान बताते हैं। अब आखिर परमात्मा कौन है, कैसा है और कहां है ?

उपरोक्त अनेक मन्तव्यों का कारण है कि परमात्मा कोई स्थूल वस्तु नहीं है जिसे चर्म चक्षुओं से देखा जा सके या स्थूल इन्द्रियों से अनुभव किया जा सके। चैतन्य परमात्मा का वास्तविक स्वरूप तो बुद्धि के द्वारा ही जाना अथवा अनुभव किया जा सकता है। प्राचीन ऋषिमुनि परमात्मा की हर प्रकार से खोज करने के पश्चात् इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि ईश्वर को पहचानना मनुष्य के वश की बात नहीं है। ईश्वर के बारे में ने:ति-ने:ति कहकर छोड़ दिया।

परमात्मा की सत्य पहचान

अब यह तो सार्वभौमिक रूप से अवश्य स्वीकार किया जाता है कि परमात्मा एक है और वह सत्य है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा का परिचय भी केवल एक ही हो सकता है।

ईश्वर की सत्य पहचान क्या होगी ? जिस प्रकार किसी डॉक्टर की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव, गुणों तथा कर्त्तव्यों के आधार पर ही की जा सकती है, उसी प्रकार परमात्मा का सही स्वरूप **पांच बातों** के आधार पर पहचाना जा सकता है।

(अ) परमात्मा उसे कहा जायेगा जो **सर्वमान्य** हो यानी जिसे सभी धर्मों की आत्मायें स्वीकार करें क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं के परमपिता हैं । उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से याद किया जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा गॉड, नूर इत्यादि परन्तु वह एक ही है ।

(ब) परमात्मा उसे कहेंगे जो **सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम** या **परम्** हो यानी उसके ऊपर कोई हस्ती नहीं हो । परमात्मा का कोई मातापिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम् शिक्षक, परम् सत्गुरु और परम् रक्षक हैं इसलिए उसकी महिमा में ही गाया गया है ''ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान् ।'' तो जिसका नाम, धाम, गुण, कर्त्तव्य सबसे ऊंचा है, वही परमात्मा है ।

(स) परमात्मा उसे कहेंगे जो **सबसे न्यारा हो** । परमात्मा जन्म मरण, कर्म फल, पाप पुण्य, दुख सुख सबसे न्यारा है । परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन क्रिया अर्थात् सतो, रजो, तमो से भी न्यारा है । वह सर्व प्राकृतिक बन्धनों से मुक्त है । इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का माना गया है । ईश्वर से ऊंचा तो कोई नहीं है, परंतु उसके समान भी कोई नहीं है ।

(द) परमात्मा उसे कहेंगे जो **सर्वज्ञ** हो अर्थात् वह सब-कुछ जानता हो । किसी भी सन्दर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है, तो वह ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, ''भगवान् जाने या अल्लाह जाने ।'' परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है ।

(क) परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार अथवा दाता हो । परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है । उसी के लिए गाया गया है ''देनेवाला जब भी देता है, छप्पड़ फाड़कर देता है ।''

अब कोई भी साकार देहधारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते हैं क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वमान्य नहीं हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो । साकार देहधारी के मातापिता, शिक्षक, गुरु रक्षक अवश्य होंगे इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं कह सकते हैं । साकार व्यक्ति सबसे न्यारा भी नहीं हो सकता है, क्योंकि साकार के साथ जन्म मरण, कर्म फल, पाप पुण्य और सुख-दुख आदि भी संलग्न हैं । साकार सर्व का ज्ञाता तथा दाता भी नहीं बन सकता है । वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शक्ति की भीख मांगता है । इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता है ।

अब हम परमात्मा के संदर्भ में उस सत्य ज्ञान का उल्लेख करते हैं जो स्वयं परमात्मा ने अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सुनाया है ।

परमात्मा अपना परिचय स्वयं देते हैं कि मैं निराकार हूं । बहुत से लोग ''निराकार'' शब्द का यह गलत अर्थ लेते हैं कि परमात्मा का कोई भी रूप नहीं है । यदि परमात्मा को कोई रूप न हो तो राजयोग बिल्कुल निरर्थक हो जाता है, क्योंकि तब परमात्मा को याद करना असम्भव हो जायेगा । हम किसे याद करें और कहां याद करें ? प्रत्येक वह वस्तु जिसका अस्तित्व है, उसका रूप या आकार भी अवश्य ही होता है, फिर चाहे वह रूप कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो । गुणों और विशेषताओं का कोई रूप नहीं है—पर जिस विभूति या अस्तित्व में ये गुण या विशेषतायें हैं, उसका आकार अवश्य होता है । उदाहरण के तौर पर सुगन्ध आकारहीन है, पर जिस पुष्प या पदार्थ से वह नि:सृत होती है उसका आकार अवश्य है । परमात्मा के गुण जैसे—ज्ञान, प्रेम, शांति, आनन्द आदि का तो कोई आकार नहीं है लेकिन परमात्मा, जो इन गुणों के स्रोत अथवा सागर या दाता हैं, आकार रहित नहीं हो सकते हैं ।

परमात्मा का सत्य स्वरूप

जिस प्रकार ''निर्गुण'' शब्द ''सगुण'' शब्द की भेंट में प्रयोग किया जाता है इसी प्रकार ''निराकार'' भी एक सापेक्ष शब्द है जो ''साकार'' की भेंट में प्रयोग किया जाता है । परमात्मा साकार देहधारी मनुष्य या सूक्ष्म आकारी, देवताओं ब्रह्मा, विष्णु, तथा शंकर की भेंट में निराकार हैं । ''परमात्मा'' शब्द का संधि-विच्छेद करने से दो शब्द बनते हैं, परम् और आत्मा । परमात्मा भी एक अति सूक्ष्म आत्मा ही है यद्यपि वह अन्य सभी आत्माओं की तुलना में अपने गुणों और कर्तव्यों में परम् आत्मा है । जैसे आत्मा ज्योतिर्बिन्दु है, वैसे परमात्मा भी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं परंतु दोनों के बीच अन्तर यह है कि परमात्मा की आत्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, सुख-दुख आदि से न्यारी है, जबकि मनुष्यात्मायें जन्ममरण के चक्कर में आनेवाली हैं और अपने कर्मों के आधार पर सुख या दुख का अनुभव करती हैं । गणित में बिन्दु का कोई माप नहीं

है इसलिए उसे भी निराकार कह सकते हैं। परंतु उसका स्वरूप अवश्य है चाहे वह कितना ही सूक्ष्म, अति सूक्ष्म क्यों न हो। वास्तव में आत्मा तथा परमात्मा के आकार में कोई अंतर नहीं है। दोनों ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। अंतर केवल उनकी ज्योति, गुण और शक्ति में है।

परमात्मा की बेअन्त महिमा

आत्मायें अनेक हैं और परमात्मा एक है। आत्माओं की महिमा सीमित है लेकिन परमात्मा की महिमा के लिए गाया गया है कि अगर सागर को स्याही बनाया जाए, पृथ्वी को कागज बनाया जाए, जंगलों को कलम बनाया जाए और साक्षात सरस्वती, विद्या की देवी, अपने हस्तों से ईश्वर की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा का अन्त नहीं हो सकता है। इतनी है अपरम्पार उस परमपिता परमात्मा की महिमा, जो रूप में ज्योतिर्बिन्दु हैं परंतु गुणों में सिन्धु है, अनन्त है। इसलिए उसकी महिमा की तुलना सागर से की जाती है। परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, प्रेम के सागर, आनन्द के सागर, पवित्रता के सागर, सर्व-शक्तिवान, सर्व आत्माओं के कल्याणकारी गतिसद्गति दाता हैं।

परमात्मा का शाश्वत् नाम

जैसे प्रत्येक वस्तु का कोई स्थूल अथवा सूक्ष्म आकार होना जरूरी है वैसे हर एक वस्तु का कोई नाम भी अवश्य होता है। परमात्मा का नाम अद्भुत है। जब कोई मनुष्यात्मा शरीर धारण करती है तो शरीर का ही नामकरण होता है, आत्मा का नहीं। आत्मा के शरीर का नाम हर जन्म में बदलता रहता है। परमात्मा मनुष्यात्माओं की तरह गर्भ द्वारा जन्म नहीं लेता है। अत: परमात्मा का न तो अपना कोई शरीर है और न ही शारीरिक नाम है। परमात्मा का नाम शश्वत् है और वह उनके गुणों और दिव्य कर्त्तव्यों पर आधारित है। लोग उसे अपनी भाषा में विविध गुणवाचक नामों से पुकारते हैं, लेकिन परमात्मा का स्वयं उद्घाटित नाम 'शिव' है। 'शिव' का अर्थ है सदा और सर्वदा कल्याणकारी। शिव अर्थात् बिन्दु। ''सत-चितआनंद स्वरूप और सत्यम् शिवम् सुन्दरम्''—उसी सत्य स्वरूप, सदा सुन्दर, कल्याणकारी पिता परमात्मा की ही महिमा है। शिव पवित्रता तथा शांति का भी सूचक है। परमात्मा शिव को शम्भु अथवा स्वयंभु भी कहते हैं क्योंकि उनके कोई मातापिता या रचियता नहीं हैं। उन्हें सदा शिव भोलानाथ भी कहते हैं, क्योंकि वह सदा ही जल्दी प्रसन्न होनेवाले कल्याणकारी पिता परमात्मा हैं।

हर धर्म में परमात्मा का यादगार

निराकार परमात्मा का ज्योति-स्वरूप आकार सर्वमान्य है क्योंकि सारे संसार में इसी का यादगार अलग-अलग धर्मों में अलग-अलग नामों से पाया गया है। भारत में ज्योतिर्लिंगम् प्रतीक उसी ज्योति-स्वरूप शिव परमात्मा की यादगार चिन्ह है, जिसके मंदिर जगह-जगह पाये गये हैं। अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, केदारनाथ, पशुपतिनाथ, महाकालेश्वर, मुक्तेश्वर, रामेश्वर, ऊंकारेश्वर, पापकटेश्वर, गोपेश्वर इत्यादि। ये सब परमात्मा शिव के दिव्य कर्त्तव्यों और गुणों का सूचक है।

भारत के १२ प्रमुख शिव मंदिरों को ज्योतिर्लिंगम् मठ (ज्योति के प्रतीक का आवास) कहा जाना पुन: सिद्ध करता है कि परमात्मा ज्योति-स्वरूप है। यहां लिंग का अर्थ ''चिन्ह'' से है। शिवलिंग परमात्मा ही के स्वरूप का स्मरण चिन्ह है।

मुसलमान भाई भी मक्का में हज यात्रा करते समय एक काला अंगुष्ठाकार पत्थर, जिसे वे ''संगएअसवद'' या ''काबा का पत्थर'' कहते हैं, को श्रद्धा अर्पित करते हैं। यह पत्थर भारत के शिवलिंग के समान ही है। उनका भी विश्वास है कि अल्लाह एक ''रूहानीरूह'' या एक ''नूर'' है।

यहूदियों की मान्यता है कि मूसा को सोनाई पर्वत पर परमात्मा का साक्षात्कार ज्योति के रूप में हुआ था। वे परमात्मा को ''जिहोवा'' कहते हैं। सभी धर्म स्थापकों ने एक निराकार की ही महिमा की है। ईसा मसीह ने कहा कि परमात्मा एक ज्योति है (गॉड इज़ लाइट), गुरुनानक ने उन्हें एको उंकार कहा। विभिन्न योगियों को भी यही ज्योति प्रतीत हुई। आज तक मंदिरों में दीपक तथा गिरजाघरों में मोमबत्ती जलाने की प्रथा है क्योंकि प्रकाश की लौ परमात्मा के स्वरूप का प्रतीक है।

जापान में एक पंथ है जिसके अनुयायी एक अंगुष्ठकार पत्थर पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। इसे वे ''चिन्कोनसेकी'' (शांति दाता) कहते हैं।

परमात्मा शिव सर्व आत्माओं के परमपिता हैं। वे देवताओं, धर्म स्थापकों के पिता हैं, क्योंकि वे शाश्वत्, सदा सम्पन्न और अपरिवर्तनशील हैं।

परमात्मा का दिव्य धाम

निराकार परमपिता परमात्मा शिव आत्माओं में परम् आत्मा होने के कारण, उनका निवास स्थान आत्माओं के निवास स्थान के समान इस भू-मंडल के सूर्य, चांद, तारागण

और पांच तत्व—आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी से पार, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के सूक्ष्म लोक से भी पार परमधाम् अथवा परलोक है । परमात्मा शिव का वहां निवास होने के कारण उस धाम् को शिवपुरी भी कहते हैं । अखण्ड सुनहरी लाल ज्योति ब्रह्म महतत्व में परमात्मा का निवास होने के कारण परमात्मा पार ब्रह्म परमेश्वर भी कहलाये गये हैं ।

कई अखण्ड ज्योति, ब्रह्म महतत्व को ही परमात्मा समझ लेते हैं । परंतु जैसे बताया गया है—ब्रह्म तो परमात्मा का अविनाशी दिव्य धाम् है । जैसे शरीर और आत्मा अलग-अलग हैं, वैसे ब्रह्म और परमात्मा शिव अलग-अलग है । यह ब्रह्म जड़ महतत्व हम आत्माओं का भी धाम् है और शिव चैतन्य परमात्मा हम आत्माओं के परमपिता हैं जिन्हें हम स्नेह से शिवबाबा कहते हैं ।

कुछ लोगों की यह विचारधारा है कि परमात्मा सर्वव्यापी है । यह मन्तव्य भावनात्मक दृष्टिकोण से तो बड़ा सुन्दर है, क्योंकि उसके आधार पर आत्मा अनुभव करती है कि वह सदा ही परमात्मा के साथ है । यह भावना तब जागृत हुई जब ईश्वर में अति आस्था और प्रेम होने के कारण जिस प्रकार प्रेमिका को अपना प्रियतम सब जगह दिखाई देता है, उसी प्रकार भक्तजन भी उन्हें जहांतहां साक्षात्कार में देखते थे । दूसरा कारण यह भी था कि महान् पुरुषों ने पाप कर्मों से बचाने के लिए साधारण जन में यह भय की भावना बैठायी कि परमात्मा हर एक के कर्मों को देख रहा है, क्योंकि वह सब जगह है । इसलिए पाप कर्म नहीं करना चाहिए । परंतु आज ईश्वर के प्रति भावना और डर तो समाप्त हो गया है । केवल यह एक खोखला सिद्धांत रह गया है कि परमात्मा कणकण में व्यापक है । जैसे कोई पिता अपने पुत्र में व्याप्त नहीं होता है, इसी तरह परमात्मा जो सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, उनमें विद्यमान नहीं हो सकता है । अगर होता तो विश्व बन्धुत्व वा ''वसुधैव कुटुम्बम्'' की बात सार्थक न होती । परमात्मा भी चैतन्य परम् आत्मा है जो आत्माओं के धाम् में ही निवास करते हैं ।

परमात्मा को परमधाम् निवासी समझने से आत्मा सहज ही अपनी बुद्धि को उस धाम् में अपने परमपिता परमात्मा शिवबाबा के पास ले जा सकती है और उनसे अनन्त प्राप्ति का अनुभव कर सकती है ।

परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य

परमात्मा का वायदा है कि—

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम् ।।"

जबजब संसार में अति धर्म की ग्लानि होती है, तबतब परमात्मा परमधाम् से अवतरित होकर अधर्म का विनाश कर सतधर्म की स्थापना करते हैं । परमात्मा अवतरित होकर वह कर्त्तव्य करते हैं जो कोई भी मनुष्यात्मा नहीं कर सकती है । परमात्मा, आत्मायें तथा प्रकृति तीनों ही अपने अस्तित्व में अनादि और अविनाशी हैं । परमात्मा शिव को आत्माओं का परमपिता इसलिए नहीं कहा जाता है कि वे आत्माओं को रचते हैं परंतु जब सभी आत्मायें तमोप्रधान, पतित, विकारी, निर्बल बन जाती हैं, तब परमात्मा शिव ही आकर सर्व आत्माओं को पावन, सतोप्रधान बनाकर उन्हें वापस परमधाम् में ले जाते हैं । परमात्मा सर्व आत्माओं के मुक्ति तथा जीवन मुक्ति दाता होने के कारण परमपिता कहलाये जाते हैं । परमात्मा स्वयं अकर्ता हैं, लेकिन सूक्ष्म देवताओं ब्रह्मा, विष्णु और शंकर द्वारा क्रमशः स्थापना, पालना तथा विनाश का कर्त्तव्य करवाते हैं, इसलिए उन्हें त्रिमूर्ति भी कहा गया है ।

संक्षेप में परमात्मा का परिचय इस प्रकार है—नाम—कल्याणकारी शिव, स्वरूप—ज्योतिर्बिन्दु, धाम्—परमधाम्, गुण—ज्ञान के सागर, शांति के सागर, प्रेम के सागर, पतित पावन, कर्त्तव्य—अधर्म का विनाश कर सतधर्म की स्थापना । अवतरण का समय—कलियुग के अन्त व सतयुग के आदि का संधिकाल ।

परमात्म-स्मृति का अभ्यास (विधि)

स्वयं को आत्मा निश्चय कर बुद्धि बल द्वारा उस परमपिता परमात्मा शिव, जो रूप में ज्योतिर्बिन्दु है और गुणों में सिन्धु है, का मन में श्रेष्ठ चिन्तन कर उनको अत्यंत स्नेह से याद करो—

विधि—मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की संतान हूं... । जैसे मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु हूं, वैसे मेरे परमपिता परमात्मा भी अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं...रूप में बिन्दु होते हुए भी वे सर्वगुणों में सिन्धु हैं... सागर हैं... । वे सर्व आत्माओं के कल्याण करनेवाले हैं, इसलिए उनका गुणवाचक नाम कल्याणकारी शिवबाबा है... । वे सदा जन्ममरण से मुक्त हैं... दुख से न्यारे हैं...एक रस और अपरिवर्तनीय हैं । शिवबाबा ज्ञान के सागर हैं...पवित्रता के सागर हैं... शक्ति के सागर हैं...सुख के सागर हैं... सर्व-शक्तिवान हैं... । अब मैं आत्मा उनके समीप हूं... । शिवबाबा प्रेम के सागर हैं...आनन्द के सागर हैं... । शांतिधाम्, ज्योति के देश में मैं अपने परमपिता परमात्मा शिवबाबा के संग में सर्वगुणों का अनुभव कर रही हूं । □□□

चिन्तन:

वैज्ञानिक, दार्शनिक व इतिहासकार क्या करें ?

□ब्र.कु. ओमप्रकाश., बांदा

एक बार एक धार्मिक गुरु 'कार्डिनल' की भेंट महान् वैज्ञानिक 'आइन्सटाइन' से हुई। बातचीत के दौरान आइन्सटाइन ने कहा, "मैं धर्म का आदर करता हूं, किन्तु मेरा विश्वास गणित में है। शायद आपकी धारणा इसके विपरीत होगी।"

कार्डिनल मुस्कराते हुए बोले, "आप गलती पर हैं। मेरे लिये धर्म और गणित एक ही ईश्वरीय यथार्थता की विभिन्न अभिव्यक्तियां हैं।"

आइन्सटाइन ने प्रश्न किया, "लेकिन अगर किसी दिन गणितीय विज्ञान यह सिद्ध कर दे कि उसकी कुछ खोजें धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध हैं, तो आप क्या कहेंगे ?"

कार्डिनल ने कहा, "ओह, गणित के लिए मेरे मन में सर्वोच्च आदर है। प्रोफेसर साहब, मुझे यकीन है कि उस हालत में आप लोग तब तक चैन नहीं लेंगे, जब तक आप यह पता नहीं लगा लेंगे कि आपकी गलती कहां थी ?"

वर्तमान समय की कुछ प्रचलित मान्यतायें निम्न प्रकार हैं—

— कि प्रारम्भ में 'पृथ्वी' नामक कोई ग्रह नहीं था, और आज से कोई ५,५०,००,००००० वर्ष पूर्व ही पृथ्वी अस्तित्व में आई।

— कि वर्तमान मानव के शरीर का विकास ३,२०,००,००,००० वर्षों पूर्व अमीबा से प्रारम्भ होकर क्रमिक विकास करते-करते आज से १०,००,००० वर्ष पूर्व हुआ था। (Darwin's theory of Evolution)

— कि आर्य भारत में कहीं और से आकर बसे थे। लोकमान्य तिलक की मान्यतानुसार आर्य अकार्कटिक प्रदेश (दक्षिण ध्रुव प्रदेश) से भारत में आये थे।

— कि सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग क्रमशः १,०८,००० वर्ष, २,१६,००० वर्ष, ३,२४,००० वर्ष तथा ४,३२,००० वर्ष अथवा दूसरी मान्यतानुसार १७,२८,००० वर्ष, १२,९६,००० वर्ष, ८,६४,००० वर्ष तथा ४,३२,००० वर्ष का होता है।

— कि भूतकाल में कभी कोई ऐसा समय नहीं रहा है, जिसमें कोई युद्ध न हुये हों, कोई लड़ाइयां न हुई हों या कोई शत्रु न रहे हों।

— कि मनुष्य कभी पाषाण युग से गुजरा था, उसके पूर्वज बानर थे, और मूलतः मनुष्य पशु-पक्षियों को मारकर तथा कंदमूल जुटाकर जीवन निर्वाह करता था और उसके पूर्वज उच्चतर नैतिक सिद्धांतों या आध्यात्मिक संस्कृति में निष्ट नहीं थे।

— कि मस्तिष्क और शरीर के अलावा कोई 'आत्मा' या अन्तरात्मा' नाम सत्ता नहीं होती।

— कि जन्म के पूर्व और मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है।

— कि मनुष्य आत्मा ८४ लाख योनियों में भटकती रहती है और अच्छे कर्म करने के फलस्वरूप वह मनुष्य जन्म पाती है।

इसके विपरीत सर्व-आत्माओं के कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव ब्रह्मा तन से कहते हैं, "मीठे बच्चों, इस सृष्टि रूपी नाटक की हर ५००० वर्षों में हू-ब-हू पुनरावृत्ति होती है। चारों युग बराबर-बराबर अर्थात् १२५०-१२५० वर्षों के होते हैं। इन ५००० वर्षों में किसी आत्मा के अधिकतम ८४ जन्म होते हैं। मनुष्य आत्मा हमेशा मनुष्य शरीर ही धारण करती है। यह सृष्टि रूपी अनादि नाटक; आत्माओं, परमात्मा तथा प्रकृति के मध्य सनातन रूप से चलता रहता है। सतयुग में आत्माएं सतोप्रधान त्रेता युग में सतो सामान्य, द्वापर युग में रजो तथा कलियुग में तमोप्रधान स्थिति में रहती हैं। कलियुग के बाद विनाश और पुनः सतयुग का प्रारंभ। मनुष्य कभी भी पाषाण युग जैसी असभ्य स्थिति में नहीं था, किन्तु आज के मुकाबले अत्यंत सुखी, शांत व समृद्ध था। सतयुग और त्रेतायुग में दैवी राज्य था और आपस में कोई लड़ाई-झगड़ा इत्यादि नहीं होता था। एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर धारण

करना यह अजर, अमर व अविनाशी, परलोक वासी आत्माओं का पृथ्वी मंच पर निरंतर चलनेवाला खेल है । इस खेल के विषय में पूर्ण सत्य जानकारी किसी भी मनुष्य आत्मा को नहीं होती किन्तु मुझ निराकार परमात्मा को ही रहती है और मैं कल्प-कल्प अर्थात् हर ५००० वर्ष पश्चात् संगम युग (कलियुग के अंत व सतयुग के प्रारम्भ के मध्य का समय) में पृथ्वी मंच पर ब्रह्मा तन के माध्यम से इस सत्य को मनुष्यों के प्रति प्रगट करता हूं, तथा उन्हें पतित से पावन बनने का रहस्य समझा, पावन बनाने का श्रेष्ठ कार्य करता हूं, जिससे मनुष्य पुन: अपने दैवी पावन सतयुगी राज्य को वापस पा जाते हैं । इस समय एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा, एक कुल तथा एकमत होता है । राजनैतिक सत्ता तथा धार्मिक सत्ता एक ही हाथों में होती है ।''

धार्मिक गुरु कार्डिनल की महान् वैज्ञानिक आइन्सटाइन से कही यह बात, ''उस हालत में आप लोग तब तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक आप यह पता नहीं लगा लेंगे कि आपकी गलती कहां थी ।'' आज और अधिक सार्थक हो उठी है—

तो हमारा तो आज के महान् वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, तथा इतिहासकारों से यही आग्रह है कि वे प्रचलित जानकारियों के प्रति यह खोजें और तब तक खोजते रहें, जब तक कि यह पता न लगा लें कि उनकी गलती कहां पर है । क्योंकि मानवता आज उस दौर से गुजर रही है, और सवाल उठ खड़ा है कि मानवता रहेगी भी या नहीं ? यह सर्वविदित सत्य है कि मानव जीवन जब गलत मान्यताओं पर आधारित होगा तो वह अपना अकल्याण ही करेगा । □□

बारीपदा में सेवक समिति द्वारा हुए सर्व धर्म सम्मेलन का उद्घाटन करती हुई ब्र.कु. कमलेश जी ।

□संगम्-युग□

□ब्र.कु. राजकुमार., नयी दिल्ली

कलियुग की जब अन्त हो, सतयुग आवन होय ।
संधि काल इन युगन को, संगम जुग जग जोय ।।१।।

कदम कदम में पदम है, एक किये लख पाय ।
अवढर दानी स्वयं भू, शिवबाबा खुद आय ।।२।।

अखुट खजाने खुशी के, समय शक्ति गुण ज्ञान ।
रत्नों से झोली भरै, संगम के वरदान ।।३।।

भक्ति को अब अंत है, आए शिव भगवान ।
भक्ति फल प्रत्यक्ष है, प्रभु अरु गीता ज्ञान ।।४।।

सारी दुनिया ढूंढती, सह जमिल्यौ प्रभु आय ।
नाज करूं निज भाग्य पै, मनुआ अति हर्षाय ।।५।।

संगम युग महिमा विपुल, प्रगट भये प्रभु आप ।
सुख शांति वरदान ले, मेंट सकल संताप ।।६।।

संगम पै बाजी लगी, पूरौ दाव लगाउ ।
चूक परै पद से गिरै, फिर पाछे पछताउ ।।७।।

संगम ऋतु पुरुषार्थ की, इक बीजै लख पाय ।
मात-पिता सन्मुख खड़ा, मन वांच्छित फल खाय ।।८।।

संगम ऋतु पुरुषार्थ की, जो चाहै सो बीज ।
एक एक को लख मिलै, परै न कब हूं छीण ।।९।।

सदा याद की मौज में, जीवन मौजन युक्त।
संगम युग मौजन भरौ, सभी मूंझते मुक ।।१०।।

खतम हुए दिन मूंझ के, मौजो के गए आय ।
भगवान हमारा बाप जब, क्यों न मौज मनाय ।।११।।

अमृत वेला सृष्टि की, संगम युग कहलाय ।
ब्रह्म मुहूर्त उठ याद कर, या विधि भाग्य लिखाय ।।१२।।

संगम माने संग चल, शिव बाबा के साथ ।
अंग संग शिव राखिये, छन नहीं छूटै हाथ ।।१३।।

दु:ख हर्ता सुख कर्ता, निज सम बाप बनाय ।
कल्याणकारी युग यही, अब सुख बांट जाय ।।१४।।

आत्म-विश्वास अथवा दृढ़ निश्चय की शक्ति

□ब्र.कु. सुन्दरलाल., दिल्ली

आत्म-विश्वास एक ऐसा गुण अथवा शक्ति है जिसके द्वारा कठिन-से-कठिन कार्य भी सहज हो सकता है। इस गुण के आधार पर विश्व के इतिहास में असंभव दिखाई देनेवाले कार्य भी आज संभव हो गये हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व मानव पक्षियों की तरह आकाश में स्वतन्त्र उड़ना चाहते हुए भी नहीं उड़ पाता था लेकिन आज वैज्ञानिक आविष्कार के द्वारा हवाई जहाज अथवा रॉकेट की सहायता से वह आसमान में उड़ता ही नहीं है बल्कि चंद्रमा तक भी पहुंच गया है। इसी प्रकार 'रेल के इंजन' का आविष्कार भी 'स्टीफेन' नामक वैज्ञानिक ने एक छोटी-सी घटना व आत्म-विश्वास के आधार पर ही किया। जब वह किचन में बड़े ध्यान से पतीले पर ढका हुआ ढक्कन को बार-बार ऊपर उठता हुआ देखता था तो उसमें आत्म-विश्वास जागृत हुआ कि भाप की शक्ति से बड़े से बड़ा कार्य किया जा सकता है और उसी के आधार पर रेल के इंजन व बड़ी-बड़ी मशीनों का आविष्कार हुआ। आज जितने भी वैज्ञानिक आविष्कार हमारे सामने हैं—जैसे कि 'रेडियो', 'टेलीविजन', सड़कों पर दौड़ती हुई कारें, बसें, पानी पर चलते हुए जहाज, व घरों में अनेक सुख-सुविधा के साधन सभी का जन्म आत्म-विश्वास की शक्ति के आधार पर ही संभव हुआ है।

भारत को सदियों की परतन्त्रता से स्वतन्त्रता दिलाने के पीछे अनेक क्रांतिकारी तथा राजनैतिक नेताओं का आत्म-विश्वास ही तो है। इतिहास साक्षी है कि जितनी भी लड़ाइयां जीती गई हैं, उनका आधार भी आत्म-विश्वास ही तो था। महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई व अनेक राजपूत योद्धाओं की वीर-गाथाओं के पीछे उनका आत्म-विश्वास ही तो था। शारीरिक तौर पर कमजोर होते हुए भी आत्म-विश्वास अथवा बुद्धि के बल पर ही राजपूत योद्धाओं ने अनेक बार पराक्रमी व शक्तिशाली आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त की है। इसके बारे में एक कहावत प्रसिद्ध है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि 'राजपूत' शरीर से ताकतवर न होते हुए भी बड़ी बहादुरी का कार्य कैसे कर लेते हैं? बीरबल के कहने पर बादशाह ने योद्धाओं की एक सभा बुलाई और ऐलान किया कि जो हथौड़े की चोट से पत्थर की भारी शिला को तोड़ने में सफल होगा उसे इनाम के साथ-साथ सेनाध्यक्ष भी बनाया जायेगा। बड़े-बड़े योद्धाओं ने अपनी-अपनी किस्मत आजमाई और लाख प्रयत्न करने पर भी उस शिला को नहीं तोड़ सके। फिर तो एक पतला-दुबला राजपूत सभा में से उठ खड़ा हुआ। उसे देखकर सभी योद्धा व दरबारी हंस पड़े और सोचने लगे कि बड़े-बड़े योद्धा इतनी विशाल शिला को नहीं तोड़ पाये तो यह पतला-दुबला राजपूत भला कैसे तोड़ पायेगा। लेकिन राजपूत बड़े ही विश्वास के साथ उस शिला के पास पहुंच कर कहने लगा कि मैं इस शिला को एक ही हथौड़े की चोट से तोड़ दूंगा बशर्ते सामने खड़ा हुआ चारण (भाट) को कुछ क्षणों के लिये एक गीत गाने की इजाजत दी जाये। भला इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती थी। जब चारण ने गीत द्वारा राजपूत को उसके बहादुर वंशजो की बहादुरी के कारनामों की याद दिलाई तो उसने शिला पर हथौड़े से एक भरपूर वार किया जिससे शिला के कई टुकड़े हो गये। इसके पीछे वास्तव में राजपूत का आत्म-विश्वास ही तो था।

इसी प्रकार अनेक भक्तों की गाथाएं प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने आत्म-विश्वास के बल पर अपने ईष्टदेव का साक्षात्कार किया तथा बड़े-से-बड़े कष्टों को हंसते-हंसते सहन किया। भक्त शिरोमणी मीरा, प्रहलाद, ध्रुव की मिसाल हमारे सामने है। इस पर भी एक छोटे से गरीब परिवार के बच्चे की कहानी प्रसिद्ध है कि उसे स्कूल पढ़ने जाते समय एक जंगल को पार करना पड़ता था। उसने एक बार अपनी मां को कहा कि आप मुझे स्कूल तक छोड़कर आया करो क्योंकि मुझे अकेले जंगल पार करने में डर लगता है और जैसा कि सभी अन्य बालकों के मात-पिता या अभिभावक उन्हें छोड़कर आते हैं। उसकी मां

बहुत गरीब थी और अन्य घरों में कार्य करके अपना व बालक का पेट पालन किया करती थी। उसने पहले तो उसे बहुत टालने की कोशिश की लेकिन बालक के आग्रह को देखकर कहने लगी कि तुम्हारा भी एक भाई उसी जंगल में रहता है जिसका नाम 'मोहन' है और उसे पुकारोगे तो वह तुम्हें छोड़ आया करेगा। बालक अगले दिन मां के बताये हुए तरीके से जंगल के निकट पहुंचकर बड़े प्यार व भोलेपन से पुकारने लगा कि मोहन भैया'... 'मोहन भैया' आप कहां हो! शीघ्र आओ और मुझे स्कूल छोड़कर आओ क्योंकि मुझे अकेले जंगल पार करने में डर लगता है। बालक के लगातार पुकारने पर सचमुच थोड़ी ही देर में कहते हैं एक छोटा-सा सुन्दर बालक ने आकर उसका हाथ पकड़ा और उसे जंगल पार करवा कर कहने लगा, 'कि स्कूल की छुट्टी होने पर मैं यही मिलूंगा।' फिर तो उस बालक का प्रतिदिन का नियम बन गया और जंगल के निकट पहुंचकर 'मोहन भैया' कह पुकारता था और वह सुन्दर बालक उसे जंगल पार कराके अदृश्य हो जाता था। इसके आगे भी कहानी काफी लम्बी है कि कैसे अनेक बार उस बालक के विश्वास को पूरा करने के लिये अनेक अद्‌भुत बातें हुईं। वास्तव में आत्म-विश्वास के आधार पर ही बालक को इस प्रकार की अनुभूतियां हुईं।

निश्चय के बल पर कैसे नदी को भी पैदल पार किया जा सकता है, इसके बारे में भी प्राण बाप-दादा हमें एक पंडितजी की कहानी सुनाया करते हैं कि एक दूध बेचनेवाला प्रतिदिन नाव द्वारा गंगा नदी पार करके बाजार में दूध बेचने आया करता था। एक बार उसने पंडितजी को कथा में कहते हुए सुना कि 'राम-नाम के प्रभाव से नदी भी पार की जा सकती है।' उस दिन वह भी बिना नाव लिये 'राम-राम' कहते हुए नदी पार करने के लिये पैदल ही चल पड़ा। उसे विश्वास था कि पंडितजी झूठ नहीं बोल सकते और वह राम के नाम के आधार पर अवश्य ही नदी पार कर लेगा। उसके इस अटल विश्वास के कारण उसने नदी को सहज ही पैदल पार कर लिया। अब तो वह प्रतिदिन नाव की इन्तजार किये बिना पैदल ही नदी को पार करने लगा। जिससे उसे धन की बचत तो हुई ही साथ में नाव के लिये जो इन्तजार करना पड़ता था उस समय की भी बचत हो गई। वह उतना समय रोज कथा सुनने में बिताने लगा। एक दिन उसने सोचा क्यों न इन बचे हुए रुपयों से पंडितजी को घर पर आमंत्रित करके भोजन कराया जाए। फिर तो पंडितजी को उसने एक दिन घर पर भोजन करने का निमंत्रण दिया जिसे पंडितजी ने सहर्ष स्वीकार किया और दूधवाले के पीछे-पीछे चल पड़ा। नदी के निकट पहुंचने पर पंडितजी तो नाव की इन्तजार में किनारे पर खड़े रहे जबकि दूधवाला पैदल ही नदी पार करने के लिये चल पड़ा और पंडितजी को किनारे पर खड़ा देखकर उनसे इसका कारण पूछा तो पंडितजी कहने लगे, 'कि बिना नाव वे इतने गहरे पानी को कैसे पार कर सकते हैं।' इस पर जब दूधवाले ने कहा कि आपने ही तो कहा था कि 'राम-नाम' से नदी भी पार हो सकती है फिर मैं प्रतिदिन बिना नाव के ही नदी पार करता रहा हूं। आप भी क्योंकि कोई भी नाव नहीं है क्यों न पैदल ही नदी पार कर लेते हैं। लेकिन पंडितजी की हिम्मत नहीं हुई और वे वापिस लौट गये क्योंकि उनको अपनी कथनी पर स्वयं विश्वास नहीं था, जबकि दूधवाला रोज की तरह नदी पार कर गया।

इसी प्रकार हम सभी आत्माओं के परमप्रिय शिवबाबा हमें आत्म-विश्वास ही तो दिलाते हैं और बार-बार हमें प्यारे बाबा आत्म-स्मृति दिला कर कहते हैं कि बच्चो 'अपने को नई सृष्टि के निर्माता आधार मूर्त अथवा उद्धार मूर्त समझेंगे तो आप महान् बन जायेंगे।' आप अपने को फरिश्ता व पैगम्बर समझो न कि साधारण आत्मा। हम बच्चों में कभी भी हीनभावना नहीं आनी चाहिए। भक्ति मार्ग में हम अपने को तुच्छ हीन, पापी व कपटी कहते आये तो हम वैसे ही बन गये थे। अब बाबा ने हमें स्मृति दिलाई है तथा हमें निश्चय हुआ है कि हम १६ कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, सर्व गुण सम्पन्न दैवी-देवता थे और अब पुनः बन रहे हैं। हम शुद्ध चैतन्य आत्मा हैं। सर्वशक्तिवान विश्व का रचियता परमात्मा हमारा साथी, मार्ग प्रदर्शक एवं परमपिता, परमशिक्षक व परम सद्‌गुरु है। अतः हमारे लिये कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। भक्ति मार्ग में केवल गाते आये थे कि परमात्मा की कृपा से पंगु भी पहाड़ लांघ लेता है, अंधा भी देखने लगता है, लेकिन अब जबकि परमात्मा स्वयं हमें **ज्ञानामृत** पिलाकर महान् बना रहे हैं, तो हमारे लिये कोई भी कार्य असम्भव अथवा कठिन नहीं है—केवल कमी है तो आत्म-विश्वास की है। कहावत भी है **'परमात्मा उसकी मदद करता है जो स्वयं अपनी मदद करता है।'** परमात्मा हमारा आत्म-विश्वास भी जाग्रत करता है कि बच्चे आपने यह कार्य कल्प-कल्प किया है। आप अनुभवी आत्मा हो क्योंकि अनेक बार पार्ट बजाया है। आपने ही नई सृष्टि के निर्माण में अपना तन-मन-धन व शक्ति लगायी है। आप ही सारे विश्व को पावन बनानेवाली 'ज्ञान गंगाए

(शेष पृष्ठ २१ पर)

"श्वेत परिधान"

□ब्र.कु. कुसुम., बोकारो

व्हाइट! व्हाई इट? श्वेत ही क्यों? अब तक कई आत्माओं ने यही प्रश्न किया है कि आप ब्रह्माकुमारी बहनें श्वेत वस्त्र ही क्यों पहनती हैं? क्या इस संस्था में आनेवालों के लिए श्वेत वस्त्र अनिवार्य हैं? मैं कहती हूं, 'हां'! कम-से-कम सेवाकेंद्र पर रहनेवाली समर्पित बहनों के लिए तो यह अनिवार्य ही है और हो भी क्यों नहीं? कल्याणकारी पिता परमात्मा शिव की हर श्रीमत् कल्याणकारी और अर्थपूर्ण ही तो होगी।

नई खोजों के आधार पर आज के चिकित्सक भी सफेद वस्त्र पहनने की सलाह देते हैं जिसका हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

अमेरिका के इंस्टीच्यूट फॉर वायो स्पेशल रिसर्च के डॉयरेक्टर अलेगजेंडर चास ने रंगों के आधार पर मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति में हेर-फेर होने की बात स्वीकार की है और इसके अनेकों उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

जर्मन एकाडमी ऑफ कलर साईंस के निर्देशक हेरोल्ड बोल फर्थ ने भी कई प्रयोग किये हैं।

शोध कर्त्ताओं का कथन है कि रंगों का प्रभाव मस्तिष्क के महत्त्वपूर्ण भागों पर विशेष रूप से पड़ता है और वहां से फिर उसी प्रकार की प्रेरणा सारे शरीर के लिए चल पड़ती है।

अंत:स्त्रावी ग्रंथियों से स्त्रवित होनेवाले हारमोन इन रंगों के प्रभाव से अपनी क्षमता में रंगों की चुम्बकीय शक्ति से न्यूनाधिक होते और अपने प्रभाव में परिवर्तन करते हैं। मस्तिष्क की पिट्यूटरी और पीनियल ग्रंथियों पर रंगों का प्रभाव प्रत्यक्ष देखा गया है। हाइपोथेलेमस क्षेत्र को इसी आधार पर उत्तेजित और शांत होते देखा गया है। यही कारण है जो दुर्बलता और रूग्णता का निवारण करने में सहायक होते हैं।

प्राकृतिक शक्तियां—प्रकाश और उष्णता बड़ा प्रखर प्रभाव स्वास्थ्य पर डालती है। गर्मी एक प्रकार की शक्ति है और वह प्रकाश से संश्रित है।

सफेद वस्त्र शरीर की गर्मी को बनाये रखने में उतना ही सक्षम है जितना कि गर्मी से युक्त रखने में।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि सफेद रंग के कपड़े गहरे रंग के कपड़ों की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में प्रकाश को संप्रेषित करते हैं। घर के दरवाजों, खिड़कियों में भी सफेद पर्दा लगाने से कहीं अधिक प्रकाश आता है।

भौतिक विज्ञान का यह सिद्धांत है कि जो रंग जिस रूप में गर्मी का अवचूषण करते हैं, इसी रूप में विकिरण भी करते हैं। जो रंग गर्मी का अवचूषण न करके प्रतिबिम्बित करते हैं, वे विकिरण भी कम करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि सफेद रंग गर्मियों के लिए मात्र शीतलतम ही नहीं है, बल्कि सर्दियों के लिए उष्णतम भी है।

बर्फ की सिल्लियों पर विभिन्न रंगों के कपड़ों का टुकड़ा रखा जाय तो हर रंग के नीचे बर्फ का पिघलाव भिन्न मिलेगा। सफेद कपड़ा बर्फ की सतह पर रह जायगा जबकि काला या दूसरा गहरा रंग का कपड़ा बर्फ के पानी में डूब जायेगा। इसका कारण गर्मी का जमाव और उसके नीचे के बर्फ का पिघलना होगा।

डॉक्टर जेम्स हार्वे केल्लाग ने भी इस दिशा में अनेक प्रयोग किये हैं। फलियों वाले पौधों को उन्होंने विभिन्न रंगों के कपड़ों से ढका। कपड़ों के सूत एक ही चीज के थे।

ढकनेवाले कपड़े उन्होंने काला, सफेद, पीला, लाल हरा और नीला लिया। कुछ दिनों के बाद देखा कि यद्यपि ऊंचाई में सभी पौधे समान मिले, पर काले रंग के कपड़ों से ढके पौधों की पत्तियां पीली या रंगहीन थीं। जो कपड़ा सफेद रंग के कपड़ों से ढका था उसकी पत्तियों का रंग, स्वाभाविक हरा था। पीले रंग से ढके पौधों की पत्तियां हरी थीं। जो पौधा लाल रंग से ढका था उसकी पत्तियों में अति हल्की हरीतिमा थी। जो पौधा नीले या गहरे हरे रंग के कपड़ों से ढका था उसकी पत्तियां बहुत कुछ वैसी ही थीं जैसा कि काले रंग के कपड़ों से ढकी पौधों की।

उनके पर्यवेक्षणों का ही फल था कि डॉक्टर केल्लाग पूरे वर्ष सफेद कपड़े पहनने लगे। उनका विचार था कि घर के अंदर रहने से जो क्षति पहुंचती है उसका बहुत कुछ निवारण इससे हो जायेगा। और स्थिति विशेष में त्वचा को अधिकतम प्रकाश मिलेगा।

डॉक्टर केल्लाग का मत है कि असमर्थ व्यक्तियों को तथा जिन्हें क्षय की प्रवृत्ति हो, सभी मौसमों में सफेद कपड़े पहनने चाहिएं।

भविष्य में नये खोजों के आधार पर और भी महत्त्वपूर्ण तथ्य

सामने आ सकते हैं । हम बच्चों को तो रूहानी बाप, रूहानी चिकित्सक "बैद्यनाथ" बाबा ने १९३७ से ही श्वेत परिधान में पलना सिखाया है ।

यूं भी हमारा लक्ष्य "शांति" है जिसका आधार "पवित्रता" है । और सफेद शांति का भी प्रतीक है तः स्वच्छता अर्थात् पवित्रता का भी प्रतीक है । इसलिये शांति दूत के हाथ में सफेद झंडा होता है ।

सफेद वस्त्र "कब्रिस्तान" और "परिस्तान" दोनों की स्मृति दिलाता । मीठा बाबा हम बच्चों को जीते जी इस कब्रिस्तान बनी दुनिया से बुद्धि से नाता तोड़ मरजीवा बनना सिखाता । सफेद कफन पहनना सिखाता । फरिश्तों को भी श्वेत वस्त्र में ही चित्रित करते हैं जो अभी मीठा बाप हम बच्चों को ज्ञान और योग की पढ़ाई पढ़ाकर बना रहा है ।
है ।

श्वेत परिधान में बाबा अभी हम बच्चों को होली हंस बना रहे हैं ।

श्वेत परिधान एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी डालता है । जैसे सफेद वस्त्र पहनने से सदा सावधानी बरतनी पड़ती कि कार्य-व्यवहार में आते भी वस्त्र गंदा न हो, कोई दाग न पड़ जाय । वहीं यह स्मृति भी दिलाता तथा पुरुषार्थ कराता कि गृहस्थ व्यवहार में रहते, संसारिक क्रिया-कलाप करते भी विकारों का दाग मुझ आत्मा पर न लगे ।

श्वेत परिधान में जब हजारों भाई-बहनें एकत्रित होते तो वो दृश्य देखने योग्य ही होता है । कितना आकर्षण है सफेद वस्त्र में ! मन को शीतलता प्रदान करने वाला । दिल शुक्रिया करता मीठे बाबा का कि परिधान के रंग के चुनाव में भी बाबा ने कितनी दूरदर्शिता बरती है । ऊंचे पुरुषार्थ में श्वेत परिधान का भी एक महत्वपूर्ण अनुदान है ।

भगवती सरस्वती ज्ञान और मधुरता की देवी है उनकी कल्पना में रंग का विशेष महत्त्व है । ऋषि ने उनको—

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला ।
या शुभ्र वस्त्रा वृता ।।

वह श्वेत वर्ण के वस्त्र धारण किये हुये हैं । यहां श्वेत रंग ज्ञान मधुरता, गम्भीरता एवं पवित्रता का उद्‌बोधक है । इसलिए कुमारी कन्याओं और उन महिलाओं को जिनके पतियों का निधन हो गया होता है, श्वेत वस्त्र धारण कराने की भारतीय परम्परा है । श्वेत वस्त्र से दूसरों के मन में भी द्वेष दुर्भाव नहीं आते, इसलिए विद्यालयों में जानेवाली कन्याओं को श्वेत अथवा हल्की एक रंग की ही साड़ी पहननी चाहिए, ऐसी मान्यता है ।

सफेद में सादगी, सात्विकता, सरलता की क्षमता है । □

आत्म-विश्वास अथवा दृढ़ निश्चय की शक्ति

(पृष्ठ १९ का शेष)

हो । सभी दुखी आत्माओं के कष्ट निवारण करनेवाली शीतला, दुर्गा अथवा आसुरी वृत्तियों का संहार करनेवाली शिव-शक्तियां हो । आप ही पाण्डव हो जिन्होंने सत्य मार्ग पर चलकर असत्य अथवा विकारों पर जीत पाई थी । आपने ही सदा जागती ज्योत बनकर विश्व की आत्माओं की बुझी हुई ज्योति जगाई थी । आप ही सच्चे पण्डे हो जो भक्तों को चारों धामों की यात्रा कराते हो । आप ही शिवबाबा के नूरे रत्न हो जिन्होंने सदा भूली-भटकी आत्माओं की रूहानी सेवा करके उन्हें परमपिता से मिलाया है और उनकी गोद का बच्चा बनाया है । आत्माओं की सगाई परमात्मा से करानेवाले आप ही सच्चे-सच्चे ब्राह्मण हो । आप ही **ज्ञानामृत** पान करनेवाले अर्जुन हो । इस प्रकार जब हमें आत्म-विश्वास अथवा निश्चय हो जाता है कि हम ही वह सर्वश्रेष्ठ आत्माएं हैं जिन्हें परमात्मा ने आकर अपनाया है तथा विश्व की करोड़ों आत्माओं में से हमें चुना है तथा हम ही विजय माला के रत्न बन रहे हैं तो हम सहज ही काम-क्रोधादि विकारों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं । जिन विकारों को जीतना बड़े-बड़े साधु-महात्मा व ऋषि-मुनि भी असंभव अथवा कठिन मानते आये हैं । आत्म-विश्वास और दृढ़-विश्वास के आधार पर कि अब परमपिता परमात्मा गीता में वर्णित अपने वायदे अनुसार इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं और माया रूपी रावण की कैद से आत्मा रूपी सीताओं को छुड़ाने का महान् कार्य कर रहे हैं तो हम भी इस रूहानी सेना में भर्ती हुए हैं और सभी को यह खुशखबरी सुनाते रहते हैं कि वह दिन अब दूर नहीं है जबकि इस धरा पर स्वर्ग आने ही वाला है । □

"सर्वश्रेष्ठ साथी"

□ब्र.कु. शकुन्तला कानोडिया बहल., हरियाणा

भले ही मनुष्य समाज का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है । अपनी बुद्धि से ऐसे विशाल और चमत्कारी कार्य कर डालता है जो स्वयं ही अपनी रचना को देखकर आश्चर्यवत् हो जाता है । परंतु फिर भी अपने को संपूर्ण नहीं समझता । इतना सब-कुछ हासिल हो जाने के बाद भी स्वयं को अल्प बुद्धि, अल्प ज्ञानी अनुभव करता है । अपूर्णता की छाया सदा उसके संग लगी रहती है । जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है—मनुष्य का कोई-न-कोई आधार, सहयोगी, सहारा या साथी ढूंढ़ना । प्रस्तुत लेख में हम चर्चा करेंगे कि मानव का सर्वश्रेष्ठ साथी कौन हो सकता है ?

साथी का अर्थ है—साथ निभानेवाला । परंतु साथ देने की परिभाषा भी बहुत लम्बी-चौड़ी है । इस दुनिया में जो भी सहारे हैं, साथी हैं वे सब अल्पकाल के लिये हैं । जैसे किसी भी सम्बंधी का, मित्र का, गुरु का, धंधे का, कला का या अपने शरीर का । मनुष्य स्वयं अल्प बुद्धि होने के कारण वह ऐसा आधार ढूंढ़ता है जो उसको सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे, कुमार्ग से हटाए । अगर उसके अंदर अच्छाइयां हैं तो उसकी पीठ थपथपाए और बुराइयां हैं तो प्यार से छुड़वाए । मनुष्य सारे दिन में हजारों से संपर्क करता है, अनगिनत संकल्प मन में चलाता है, सैंकड़ों कर्म करता है । उसको जरूरत पड़ती है एक-एक संकल्प, एक-एक कर्म के लिए निष्पक्ष राय दे कि तेरा फलां सोचना सर्व के लिए कल्याणकारी था और फलां कर्म सर्वहितकारी था । भले ही मनुष्य बुद्धि से चांद पर जा पहुंचा हो परंतु संपूर्णता को देखता है तो अभी भी धरातल पर है । इतिहास में भी बड़े-बड़े बुद्धि बल और बाहुबल वाले राजा भी मंत्री (मंत्रण देनेवाला) रखते थे, ताकि वह हर कार्य के लिए श्रेष्ठ सलाह देता रहे । लेकिन मंत्री भी तो स्वयं संपूर्ण नहीं है अतः वह १००% श्रेष्ठ राय नहीं दे सकता । जैसे मान लो, आपका कोई मित्र है । बहुत श्रेष्ठ विचारोंवाला है । आपको हमेशा शिक्षा देता है कि कभी भी किसी के साथ बुरा व्यवहार न करो । परंतु जब आप उसके किसी विरोधी को बुरा-भला कहेंगे तो कहेगा आपने बहुत अच्छा किया, वह इसी के काबिल था । या मुख से न भी कहे तो भी मन में जरूर प्रसन्न होगा । ऐसा थोड़े ही है कि बुरी भावना या गलत व्यवहार सिर्फ अच्छे मनुष्य के प्रति ही बुरी है । वह तो बुरे के साथ भी नहीं होना चाहिए । क्योंकि प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है तो बुराई की प्रतिक्रिया बुराई ही होगी । भले ही वह बुरे के साथ क्यों न की गई हो !

फिर मनुष्य चाहता है कि उसे ऐसा सहारा या साथ मिल जाए जो उसे कभी भी कोई कमी महसूस न हो । वह चाहता है कि अपनी जीवन नैया को किसी कुशल और विश्वसनीय मांझी के हाथों सौंप कर स्वयं निश्चिंत हो जाये । क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है । उसको घर परिवार देखना होता है, नौकरी-धंधे सम्भालने पड़ते हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के वातावरण व परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है । तो साथी ऐसा हो जो उसका सर्वांगीण विकास करे, एकांगी नहीं । वह मनुष्य के जीवन के हर पहलू से जुड़ा हुआ हो और कदम-कदम पर सर्वश्रेष्ठ राय दे सके । और वह राय भी सिर्फ एक पक्षीय न हो बल्कि सार्वजनिक सत्य (Universal Truth) हो और उस मनुष्य के वर्तमान, भूत और भविष्यकाल को अच्छी तरह जानकर दी गई हो । परंतु ऐसे साथी में दो विशेषताएं तो जरूर होनी चाहिएं । एक तो वह सदा सर्वदा के लिए सत्य होना चाहिए और दूसरा उसका साथ अविनाशी हो ! इस दृष्टि से सदा सर्वदा के लिए सत्य तो एक परमात्मा ही है । कहते हैं God is Truth । भगवान् ही सत्य है और वह ही सदा साथ देनेवाला है क्योंकि अविनाशी है । वैसे भी इस दुनिया के लिए तो गायन है—झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार... । तो इस दुनिया में सच्चा साथी मिलेगा यह कल्पना-मात्र है । जब मंदिर में जाते हैं, भजन-कीर्तिन करते हैं तो 'सतसंग' नाम देते हैं, माना कि हम सत (परमात्मा) का संग करते हैं । परमात्मा ही सत्य है, सर्वश्रेष्ठ है, संपूर्ण है, सर्वज्ञ है—यह सर्वमान्य है फिर मनुष्य को परमात्मा साथी के रूप में मिल जाए तो उसका जीवन भी सर्व प्राप्तियों से सर्व गुणों से परिपूर्ण हो जाए । उसकी इस महिमा से कि तुम्हीं माता हो पिता, बन्धु, सखा और विद्या-धन भी तुम्हीं हो—सिद्ध होता है कि वह खुदा कभी दोस्त बना भी है जिसकी प्राप्ति हो जाने के बाद कोई अप्राप्ति नहीं रह जाती ! (शेष पृष्ठ २४ पर)

समस्या - तपस्या

□ब्र.कु. अवधेश., भोपाल

जीवन को श्रेष्ठतम् ऊंचाइयों को छूनेवाली विश्व की समस्त मानव आत्माओं को तपस्या और समस्या इन दोनों शब्दों से जीवन में बहुत गहरी दोस्ती करना उतना ही अनिवार्य है जितना शरीर और भोजन का सम्बंध है।

किसी भी कर्म की सफलता का अमृत-पान तभी स्वादिष्ट लगता है जबकि जीवन में अनेकों जटिल समस्याओं को पार कर पायी हो। और ऐसी जबर्दस्त समस्याओं में लगा हुआ तल्लीन मन व तन,कर्म व भावना का एकमात्र नाम ही तपस्या है। तपस्या कोई एक साधारण बोलचाल की भाषा का नाम नहीं। न ही किसी समाधिष्ट व आंख बंदकर बैठक का नाम। परंतु तपस्या एक जबर्दस्त आत्मविश्वास, कड़ी मेहनत, सर्वशक्तियों का भंडार व हिमालय पर्वत जैसी ऊंची भयानक समस्याओं को पार कर लेने का नाम है। अत: यह कहना उचित ही होगा कि एक तपस्वी मूर्त बननेवाली आत्मा को रोज जटिल समस्याओं का आहवान करना चाहिए जिससे समस्या के थर्मामीटर से तपस्या की शक्ति को मापा जा सके। समस्या में अटक जाना माना तपस्या में ढीलापन है। इसी बात को हम ऐसे भी कह सकते हैं कि समस्या आती है आपकी तपस्या की गति को तेज करने के लिए। अत: समस्या के रूप को देख कर यह नहीं सोच लेना चाहिए कि समस्या के कारण तपस्या में कमी हुइ बल्कि यह महसूस करना चाहिए कि हम तपस्या के मार्ग में बड़ी धीमी गति से चल रहे थे। समस्या ने आकर धक्का दिया, आगे बढ़ाने के लिए। अत: इन दोनों की गहरी दोस्ती तो विधाता के विधान में निहित है। पर ऐसी दोस्ती को हमें बड़े आदर के साथ स्वीकार करना है।

बाबा ने राजयोग द्वारा प्राप्त जिन शक्तियों का राज़ समझाया है, उन सबकी उपयोगिता कहां हो सकती है। जहां समस्या की जबर्दस्त चट्टान है। अत: यह कलियुगी दुनिया है ही समस्याओं का घर। और ऐसी ही दुनिया में परमात्मा पिता आकर अपनी सतोप्रधान दुनिया का निर्माण भी करते हैं। हम योग द्वारा सर्वशक्तियों की अनुभूति तभी कर पाएंगे जब सर्व प्रकार की समस्याओं में सफलता पाते जाएंगे। जैसे विद्यार्थी की मेहनत की प्रशंसा परीक्षा देने से ही होती है। सोने का निखार अग्नि में जलने से ही होती है। योद्धाओं को विजय पदक रणक्षेत्र में विजय पाने से ही मिलता है। बुद्धि की शक्ति का परीक्षण इंटरव्यू लेने से ही होता है। ठीक इसी प्रकार तपस्या की सत्यता समस्या का हल करने से ही होती है।

क्या आपने अपने मन में कभी ऐसा विचार किया कि एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवालों में कितना अदम्य उत्साह, आत्मविश्वास, लक्ष्य प्राप्ति की अटूट लगन, कितनी शारीरिक व मानसिक हिम्मत है?

अब जरा सोचिए कि इधर परमात्मा-प्राप्ति की अभिलाषा जीवन का देवतुल्य आदर्श स्वरूप बनना, संसार की ज्वलंत समस्याओं जैसे पापाचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, भाषाभेद, रंग-भेद, जाति-भेद, बेरोजगारी, गरीबी, अनुशासनहीनता, चोरी-डकैती, हिंसा आदि का निदान करना इसके लिए कितनी शक्ति, तल्लीनता, दृढ़ संकल्प की जरूरत है। पर ऐसी समस्याओं में तपस्या की गहरी दोस्ती कायम रखने के लिए हमें जीवन में चार बातों को धारण करना अनिवार्य है।

१—एकाग्रता

समस्या का रूप कितना भी जटिल हो पर मन कभी हलचल में न हो। एकरस एकाग्र, अपने किये हुए संकल्प में जरा भी अंतर न आने दें। मन की एकाग्रता ही कर्म की कसौटी है। बुद्धि, व्यक्ति, कर्मेन्द्रियां इसी इंतजार में होते हैं कि क्या फाइनल आर्डर है। आर्डर होते ही सभी सेवाधारी सेवा में संलग्न हो जायेंगे। जब तक हलचल है, तब तक कुछ नहीं, सोचने में ही समय, शक्ति नष्ट होती जायेगी और परमात्मा का भी रखा हुआ वरदानी रूपी हस्त हमारे सर से उठ जायेगा। अत: एकाग्रता ही समुद्र जैसी खाइयों को पाटनेवाली सफलता का नाम है।

तराजू का कांटा भी जब तक एकाग्र नहीं होता तब तक वस्तु की सही कीमत आंकी नहीं जा सकती। इसी प्रकार बुद्धि रूपी कांटा भी एकाग्र हो तो कर्म की कुशलता का अनुभवी बन सकते हैं।

२—अन्तर्मुखता

तपस्वी मूर्त बनने के लिए अन्तर्मुखी बनना बहुत आवश्यक है। हम सदैव अपने अन्त:करण में यह झांक कर देखें कि मेरे में कौन-सी महानता व शक्ति है जो अभी तक सुषुप्त अवस्था में है। उसे जगाना है और उसका सही प्रयोग करना है। बाहरी

दृष्टिकोण तो बहुत ही कमज़ोर, हीन, दूषित है । लेकिन हमें अन्तर्मुखी बनकर अंतर आत्मा की पुकार को सुनना है ।

३—निर्भयता

संसार में श्रेष्ठतम् आदर्श अपनाने के लिए, जीवन की समस्त शक्तियों का सही प्रयोग करने के लिए अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जीवन में निर्भयता का गुण बहुत आवश्यक है । क्या डर से कोई सही, समय पर काम हुआ है, न हो सकता है । शक्तिशाली आत्मा माना ही जिसमें किसी व्यक्ति, समाज, परिस्थिति का भय न हो । भय हो पाप कर्म करने में, मन मत पर चलने में, श्रेष्ठ कार्य करने में व श्रीमत् पर चलने में डर क्यों ? निर्भयता का गुण मार्ग में आनेवाले रोड़े, पत्थर, कांटे को साफ करने का एकमात्र साधन है।अत: निर्भयता के बिना तपस्या हो नहीं सकती । जितनी महान् आत्माएं हुई हैं, धर्म पिता हुए, उन्होंने निर्भयता के आधार पर ही संसार को श्रेष्ठता का पाठ पढ़ाया है । फिर कहावत है कि सांच को आंच नहीं । सच की नाव डोलेगी जरूर पर डूबेगी नहीं । इतिहास, शास्त्र, यादगारें, भरी पड़ी हैं । सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

४—सहनशीलता

संसार की महान् हस्तियों ने हमें यह पाठ पढ़ाया है कि कुछ बनने के लिए सहनशीलता का गुण धारण करना जरूरी है । सहनशीलता का गुण बहुत पावर-फुल टॉनिक है जो कैसे भी पत्थर हज़म कर लेता है । संसार के कुछ प्राणी इसीलिए ही पैदा हुए हैं जो खुद करना नहीं चाहते पर आपकी शक्ति को टटोलना चाहते हैं । और आपके विश्वास को, लग्न को, संकल्प-शक्ति को टटोलने का स्वरूप कटाक्ष करना, निंदा करना, आरोप लगाना, बदनाम करना, झूठ बोलना, समाज से बहिष्कार करना, अत्याचार करना ही बनाया है । पर इसका सही स्वरूप आपकी शक्तियों को प्रत्यक्ष करने का ही है । इसलिए हमें विचलित न होकर हर परिस्थिति को सहन करते जाना है । यह सहन करना माना अपनी शीलता को बढ़ाना है । अत: आज के वर्तमान समय जबकि कलियुग के अंत व सतयुग की आदि बेला का यह पावन युग पुरुषोत्तम संगम युग है । इस युग में परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हम सर्व ब्रह्मा वत्सों को तपस्वी मूर्त बनाकर सर्व समस्याओं का निदान कर रहे हैं । और स्वर्णिम युग की स्थापना कर रहे हैं । □□

सर्वश्रेष्ठ साथी (पृष्ठ २२ का)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के हजारों नर-नारी एक परमात्मा को अपना जीवन साथी बनाकर उसी की श्रीमत् (सर्वश्रेष्ठ राय) के अनुसार अपना संतुष्ट और निश्चिंत जीवन यापन कर रहे हैं । परमात्मा सर्व का कल्याणकारी होने के कारण उसकी श्रीमत् सर्व के लिए कल्याणकारी है । भले ही मानव अल्प-बुद्धि होने के कारण यही समझे कि इसमें तो मेरा अकल्याण हो जायेगा । क्योंकि परमात्मा त्रिकालदर्शी होने के कारण मनुष्य के तीनों कालों को देखते हुए श्रीमत् देते हैं । अत: उसकी श्रेष्ठमत् पाकर मनुष्य संपूर्णता की ओर बढ़ने लगता है । उसमें दिव्यता का प्रवेश होता जाता है । क्योंकि जैसा संग वैसा रंग लगता है । इसीलिए लोग कहते हैं, ब्रह्माकुमारियों के पास जादू है । जब लोहा-चुम्बक का संग करता है तो उसमें चुम्बक के गुण स्वत: आते हैं । इसमें जादू कहां से आया ?

ईश्वरीय संग सर्वश्रेष्ठ संग है । उसका संग बाह्य दुनियावी दूषित वातावरण से एक कवच का काम करता है । यही कारण है कि इस विश्वविद्यालय के भाई-बहनें हर प्रकार के वातावरण में रहते हुए अनेक प्रकार के व्यसनों से अपने को मुक्त बनाये हुए हैं ।

हम ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां अपने अनुभव और विश्वास के साथ यह कहते हैं कि वर्तमान समय स्वयं निराकार परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी तन का आधार लेकर हमें माता-पिता की पालना दे रहे हैं, शिक्षक बनकर पढ़ा रहे हैं, दोस्त बनकर कदम-कदम पर श्रीमत् दे रहे हैं और सतगुरु बनकर सद्गति की राह भी दिखा रहे हैं । हमें उनकी श्रीमत् उन के ब्रह्मा मुख से उच्चारित महावाक्यों से मिलती है जिसे हम 'मुरली' कहते हैं । इस मुरली में ही हमें सुबह उठने से लेकर रात सोने तक सर्व कल्याणमयी श्रीमत् मिलती है । हम आपको यह शुभ संदेश देते हैं कि पूरे सृष्टि चक्र में, सृष्टि के संपूर्ण इतिहास में यह शुभ वेला केवल इस कलियुग के अंतिम चरण में आती है जबकि स्वयं भगवान् मनुष्य को सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनाने के लिए उसका सर्वश्रेष्ठ साथी बनकर धरा पर अवतरित होते हैं । परंतु उसकी दोस्ती को सतत बनाये रखने के लिये मेरा तो 'एक (शिवबाबा) दूसरा न कोई' यह महामंत्र अति आवश्यक है । □

धर्म-कर्म

□ब्र.कु. चन्द्रपाल, कासगंज., उ.प्र.

पात्र परिचय

धर्मपाल सिंह— (धर्मशाला निवासी)
कर्मपाल सिंह— (धर्मपाल का मित्र, हरिद्वार निवासी)
साधू और चेला—
वेदाचार्य— .
संन्यासी—
शास्त्री जी— (अध्यापक)
गांव का मुखिया—
बालिका— (३ दिन की ब्रह्माकुमारी)
ब्रह्माकुमारी—
मंच सचिव—

मंच सचिव—(नाटक का परिचय देते हुए)

धर्मपाल जी १० वर्ष की आयु में ही अपने पिता जी के साथ अमेरिका चले गये थे । १४ वर्ष बाद जब लौटे तो अपने बाल मित्र— कर्मपाल जी से मिलने उनके यहां हरिद्वार आये ।

—:प्रथम-दृश्य:—

धर्मपाल—(गाने की मुद्रा में)

भाई कर्मपाल ये तो बताओ जरा, ये हरिद्वार कैसा सजाया गया है ।

यहां वृक्ष चन्दन के खंभे गड़े हैं, वहां हार फूलों के बन में पड़े हैं,
कहीं डालियां भी लचक खा रही हैं, कहीं झार रेशम बंधाया गया है ।
कहीं बिजलियां जगमगा रही हैं; ये देख तितलियां शरमा रही हैं,
लगी नारी-नर की है भीड़ भारी, इन्हें किसलिए फिर बुलाया गया है ।।

(कहते हुए)—भाई कर्मपाल ! ये बताओ कितना सुन्दर वातावरण है, कितनी सजावट है । घर-घर में, शहर में, मकानों में, दुकानों में खुशियां ही खुशियां नज़र आ रही हैं । और वो देखो गंगा के किनारे कितना सुन्दर शहर बसा हुआ है । कब से बसा है ? किसने बसाया इसे ? क्या सरकार ने...

कर्मपाल—(बीच में) नहीं भाई धर्मपाल जी ! ये शहर नहीं है, ये तो महाकुम्भ का मेला लगा हुआ है ।

(प्रत्युत्तर में गाते हुए)

१२ वर्ष के बाद में, लगे यहां पर कुम्भ ।
कुम्भ में आवें लाखों नर-नारी, और मरें संख्या में भारी ।।
मरे संख्या में भारी, यहां पर होय अनेकों झगड़े ।
क्या साधु, क्या सन्त, हज़ारों आवें लूले-लंगड़े ।।
आठ मील के इर्द-गिर्द में—लाखों माइक होई ।
अपनी-अपनी धुनें सभी न सुने कोई की कोई ।।
पैदल यात्री के सिवा, न आये कोई सवारी ।
मोटर गाड़ी दूर रही, नहिं कोई साइकिल सवारी ।।

धर्मपाल—भाई, ऐसा क्यों होता ? क्या लोग झगड़ने और मरने के लिए ही आते हैं यहां ?

कर्मपाल—नहीं, भाई...नहीं । गंगा में पहली डुबकी लगाने के लिए एक-दूसरे अखाड़े के साधू-संन्यासी झगड़ते हैं कि पहले हम नहायेंगे, हमारा गुरु सबसे बड़ा है । और इतनी भीड़ होती है कि जो दब गया, वो मर गया । अगर नाव डूबी तो सैंकड़ों एकसाथ मर जाते और तो कई स्नान करते डूब जाते मर जाते ।

धर्मपाल—(दोहा)—

जहां मरें सैंकड़ों लोग वहां फिर कोई काहे आवे ।
जहां होय संत के झगड़े, वहां भीड़ कहां से आवे ।।

(बोलने की मुद्रा में)—जहां इतने लोग मरते हैं, झगड़े होते हैं और ८ मील पैदल चलना हो, वहां इतने लोग क्यों आते हैं ?

कर्मपाल—अरे, आप इतना भी नहीं जानते ? सुनो, जब देवताओं और दैत्यों ने मिलकर सागर मन्थन किया तो जो सागर से अमृत निकला वह विष्णु भगवान् ने देवताओं को यहां ही बांटा था । तब कुछ अमृत की बूंदें जमीन पर गिर गयी थीं । जब भागीरथ गंगा लाये तो यह भूमि अमरभूमि बन गयी । हर १२ वर्ष बाद वह घड़ी आती है उस समय जो स्नान कर लेता है वह सीधा स्वर्गलोक अथवा अमरलोक चला जाता है । और

पाप खत्म हो १०० यज्ञ से भी ज्यादा पुण्य का फल जमा हो जाता है इसलिए बहुत लोग देश-विदेश से भी नहाने यहां आते हैं ।

धर्मपाल—अच्छा, चलो हम भी स्नान कर धर्म-कर्म कर १०० यज्ञ जितना पुण्य जमा करके आयेंगे । चलो, दोनों चलते हैं ।

(दोनों का प्रस्थान)

—:दूसरा-दृश्य:—

गंगा में साधू-चेला स्नान कर रहे हैं । साधू ने एक बहते हुए बिच्छू को देखा तो उसे बाहर निकालने के लक्ष्य से हाथ से ही पकड़ लिया । लेकिन यह क्या... उसे पकड़ते ही बिच्छू ने साधू की उंगली में डंक मार दिया । साधू ने उसे छोड़ दिया । बिच्छू पुन: डूबने लगा तो साधू ने उसे फिर उठाया, पुन: बिच्छू ने डंक मारा किन्तु यह प्रक्रिया चलती रही । ऐसा बार-बार देख चेले से न रहा गया । बोल उठा—

चेला—स्वामी जी पापी को पाप का फल मिलना ही चाहिए । इसे डूबकर मर जाने दो ।

(दोहा गाता है)

बहते को बह जाने दो, मत पकराओ ठौर ।
भला-बुरा माने नहीं, दो धक्का दो और ।।

साधू—बेटा, उसे बचाना मेरा धर्म है और डंक मारना उसका कर्म है ।

एक बालिका का आना !

बालिका—महात्मा जी ! धर्म धारणा का नाम है । किसी को गुण धारण कराना—ये धर्म का काम है न कि कातिल के हाथ में तलवार पकड़ा देना ।

साधू—हूंSSS । बहुत तीखी है और कुछ बता ।

चेला—स्वामी जी, इसे मार के भगा दूं अभी... ?

साधू—नहीं बेटा, अच्छी बात कह रही है । हां बेटी, और कुछ बता... ।

बालिका—'स्व' का धर्म-कर्म क्या है, वह तो हमारी बहनजी बतायेगी, लेकिन जितने यहां पर बैठे हैं सबसे एक प्रश्न पूछती हूं कि मैं अभी छोटी हूं इसलिए कुछ और नहीं बताती पर आप सबसे बड़ी हूं । तो ये बताओ—छोटी क्यों और बड़ी क्यों ?

वेदाचार्य—(उठ खड़े होना, गुस्से में) छोटी मुंह बड़ी बात । इसमें कौन-सी बात है रे । देख, मनुष्य का धर्म और कर्म है—यज्ञ, तप करनाSSS..., वेद-मंत्र जपना, गीता-भागवत् आदि का पाठ रखना और नित्य पाठ करना । हम सभी को देख, तेरी उम्र कम है अत: छोटी है । हम सभी की उम्र ज्यादा बीत चुकी है । तेरी उम्र कम बीती है इसलिए तेरी उम्र अभी बाकी बड़ी है । इसलिए बड़ी है ।

संन्यासी—इतना ही क्यों, मन्दिर में जाप-पूजा करना, दान-पुण्य करना और कराना, सब-कुछ होते त्याग करना अर्थात् संन्यास करना, साधुओं की सेवा करना—यह सब तो धर्म का ही काम है । और स्त्रियों को यह सब काम करने का अधिकार ही नहीं है इसलिए स्त्री कितनी भी बड़ी हो पर होती जरूरी छोटी ही ।

शास्त्री जी—बस...बस...बस । बच्चों का जो मूल धर्म है वह मैं बताता हूं । सफाई रखना और स्वच्छ रहना । सच बोलना, समय पर स्कूल जाना, ध्यान से पढ़ाई पढ़ना, अध्यापक की आज्ञा का पालन करना, आपस में प्यार से रहना, लड़ना-झगड़ना नहीं, शांति से रहना—ये सब बच्चों का धर्म-कर्म है ।

गांव का मुखिया—(डंडा खटखटाते हुए) तुम सब मतलबी हो, मतलब की बात बतावति हैं । जो बच्ची का मूल धर्म है उसको काहे छिपावति हैं । सुनो, बच्ची का मूल धर्म जिस मात-पिता ने जन्म दिया, पालना की, उनकी सेवा करना, घर के सभी काम आदि सीखना और मां के काम में हाथ बंटाना । परिवारवालों की आज्ञा मानना, बड़ों से अदब से रहना । बड़ी होकर शादी कर नई गृहस्थी बनाना, उसे सुचारू रूप से चलाना । बच्चों की पालना और पढ़ाई पर ध्यान रखना । बच्चों की शादी आदि करके फिर दान-पुण्य यज्ञ आदि कर तपस्या करने चले जाना ।

यह है सच्चा धर्म का कर्म करना ।

बालिका—आप सबने बहुत अच्छा बताया लेकिन 'स्व' का जो सच्चा धर्म और कर्म है वह हम सब उस सामनेवाले आध्यात्मिक संग्रहालय में सुनेंगे वहां बहनजी बहुत अच्छा बताती हैं वह सुनकर आयेंगे ।

(सभी एकसाथ 'बहुत अच्छा' कहकर चले जाते हैं)

—:तृतीय-दृश्य:—

(सभी का प्रश्न सुनकर)

ब्रह्माकुमारी—(बड़ी धैर्यता व मृदुता से) आइये, इसमें आपके प्रश्नों का उत्तर मिल जायेगा । (आत्मा के परिचय वाले चित्र पर ले जाना)

'स्व अर्थात् मैं आत्मा। मैं एक शुद्ध, अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूं। आत्मा का धर्म है—शांति, आनंद, प्रेम, दया, ज्ञान, गुण, शक्ति स्वरूप आदि मुख्य गुण ही स्वधर्म हैं।

और कर्म है, इन धर्मों में स्थित हो कर्मक्षेत्र (शरीर) में आना और देखना, सुनना, बोलना, चलना, करना आदि-आदि। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करना।

सभी एकसाथ—यह तो सभी करते ही हैं, इसमें धर्म का काम क्या?

ब्रह्माकुमारी—(उदाहरण) जैसे एक बार एक चौराहे पर तीन व्यक्ति बैठे थे और उधर से एक औरत सुन्दर साड़ी पहने गुजरी। तो एक व्यक्ति बोला—'कितनी सुन्दर औरत है?' दूसरा व्यक्ति बोला—'अहा! कितनी सुन्दर लगती है?' तीसरी बोला—'ये तो सीता माता समान है।'

अब आप देखिए, तीनों में एक का पाप के खाते में जमा हुआ और दूसरे का धर्म में। तो देखते-सुनते सब हैं लेकिन जो स्वधर्म में स्थित हो देखता-सुनता करता है, वह धर्म का कर्म है। बाकी सारे काम अधर्म अर्थात् पाप के खाते में जमा होनेवाले हैं, क्योंकि वह देह-अभिमान के वशीभूत होकर किया हुआ होता है।

एक स्वर में सभी—बहुत अच्छा-अच्छा।

बालिका—क्या स्व अर्थात् आत्मा के बारे में कि वह क्या है, कहां रहती हैं। इसे बताने का कष्ट करेंगी?

ब्रह्माकुमारी—हम सभी का शरीर ५ तत्वों से बना हड्डी-मांस का पुतला है जब इस जड़ शरीर में चैतन्य अस्तित्व आत्मा प्रवेश करती है तो इसे मनुष्य अर्थात् जीवात्मा की संज्ञा दी जाती है। इस आत्मा के निकल जाने पर इसे मर्दा कहा जाता है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा ग्रहण करती है।

आत्मा मन, बुद्धि, संस्कारों की शक्ति से युक्त ज्योति स्वरूप बिन्दु रूप है। शरीर मोटर जैसे है जिसका संचालन आत्मा ड्राइवर करती है।

बालिका—आत्मा कहां से आती, कब आती और जाती कब और कहां है—क्या यह भी बतायेंगी?

ब्रह्माकुमारी—(तीनों लोक के चित्र पर) यह है साकार मनुष्य लोक जिसमें ५ तत्व व इसमें निर्मित देह और भौतिक जगत का कारोबार चलता। इसे ही कर्मक्षेत्र भी कहते। और यह सूर्य-चांद तारागणों से पार सूक्ष्म लोक आकारी दुनिया है और इसके भी पार सुनहरे लाल प्रकाश का यह परमधाम है जहां आत्माएं व परमात्मा निराकार शिव रहते हैं यहीं से आत्माएं कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाने साकार लोक में जाती हैं। जहां सतयुग, त्रेता द्वापर और कलियुग चारों युगों में पुनर्जन्म लेती आत्मा अधिकतम ८४ जन्म लेती है। कलियुग अंत और सतयुग आदि के पुरुषोत्तम संगम युग में परमात्मा, पतित और दुखी आत्माओं को पावन और सुखी बनाकर वापस घर परमधाम ले जाते हैं। यह धर्म और कर्म का ज्ञान एक परमपिता परमात्मा ही बताते हैं। अच्छा... हम सभी कुछ देर ईश्वरीय स्मृति में बैठते हैं (ट्यून बजता है, लाल मद्धिम रोशनी... पुनः प्रकाश)

सभी मिलकर—धन्यवाद, बहन। आज हमनें अपना सच्चा धर्म-कर्म जाना है। ओमशांति! (सभी का जाना)

पटाक्षेप

विजयवाड़ा में भ्राता बाबूराव, एस.पी. रेलवे, चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

तिनसुकिया सेवाकेंद्र पर स्वर्ण जयन्ति के उपलक्ष्य में ५० घंटे की योग तपस्या का उद्घाटन ५० दीपक प्रज्ज्वलित कर, किया जा रहा है।

ब्रह्मपुर सेवाकेंद्र द्वारा कुलपाणी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कलैक्टर भ्राता अरविन्द जी ।

फरीदकोट में राजयोग भवन का उद्‌घाटन करते हुए डी.सी. भ्राता भूपिन्द्र सिंह सिद्दू जी ।

भरतपुर सेवाकेंद्र द्वारा वैर कस्बा में प्रदर्शनी का उद्‌घाटन कर रहे हैं भ्राता डॉ. आर.वी. गोयल जी ।

भक्तपुर (नेपाल) में त्रिदिवसीय प्रदर्शनी के उद्‌घाटन समारोह का दृश्य ब्र.कु. बहिनें तथा प्रतिष्ठित महानुभाव शिवबाबा की याद में खड़े हैं ।

बरनाला में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के उद्‌घाटन के बाद ब्र.कु. बृज भ्राता सुशील कुमार मोदगिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

देहली— शाहदरा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन पश्चात् भ्राता किशनलाल सदस्य नगरनिगम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कमला जी ।

समय की सूझ

□ब्र.कु. निर्मला., कोटा

रवि वसुधा की गोद में समाने की तैयारी कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो पूरे दिन जग को प्रकाश देने के पश्चात् शायद थक-सा गया हो। क्षितिज में लालिमा फैल चुकी थी। थके पंछी अपने-अपने नीड़ की ओर लौट रहे थे। उनकी चह-चहाक से नभ में मधुर ध्वनि गूंज रही थी। अब तो भास्कर अपनी अंतिम किरणों को समेट लाल-लाल स्वर्णिम आभा के साथ पहाड़ी की ओट में आहिस्ता-आहिस्ता छिप रहा था। फिर भी उसके मुख मंडल पर दुख का कोई चिन्ह नहीं। क्योंकि वह भविष्य में उदय होने के लिए वर्तमान में अस्त हो रहा था।

अब तो रवि पूरा अस्ता चल को जा चुका था। सुनहरी गोल्डन लालिमा क्षितिज में फैल चुकी थी। रजनी अपनी कृष्ठा ओढ़नी संसार पर तानने जा रही थी।

पूर्व दिशा में उदय मान रजनी कर अपनी सम्पूर्ण कला के साथ तारागण को साथ लेकर उदय हुआ। अंधियारा व उजाला में संघर्ष शुरू हुआ अब। कुछ क्षणों के बाद अंधिया धरा से पलायन कर गया। धरा पर चांदी सी चांदनी बिखर गई।

यह एक जंगल का पठार था। जिसमें से होकर एक पगडंडी (Path) थी। दो प्राणी इस पगडंडी पर बात करते चल रहे थे। सर पर दोनों के लकड़ी के गट्ठर रखे थे। ये दोनों बहिन-भाई थे। हालांकि आयु में बहिन बड़ी थी फिर भी दोनों का बचपन था। जंगल पास होने के कारण मां ने जंगल से लकड़ियां लाने भेजा था। लकड़ियां बीनने में देर हो गई थी। जंगल की नीरवता व सायं-सायं की आवाज दोनों के मन में भय पैदा कर रही थी।

मौन भंग करती हुई बहिन बोली—''प्यारे भैया! जल्दी से चलो। यह भयानक जंगल है। यहां भयंकर जंगली जानवर रहते हैं। शेर, भालू, चीते आदि। जब सभी मनुष्य जंगल से चले जाते हैं तो रात के समय निकलते हैं।''

भाई—''मैं थक गया हूं चलते-चलते मुझे तो अब डर भी लग रहा है। आसपास से सभी जा चुके हैं।'' उस सुनसान जंगल के नीरव वातावरण में उस बालक के मन में डर पैदा होना स्वाभाविक था।

बहिन—''डरो नहीं! मेरा भैया बहुत बहादुर है। देखो, नीचे तक चलते हैं। फिर वहां कोई डर की बात नहीं। इतने में बाबा आ जायेंगे। फिर मैं तुम्हारे साथ जो हूं।'' बहिन ने धैर्य बंधाते हुए कहा।

भाई—''बहिन! बाबा ने कहा था इस जंगल में एक भयंकर भालू रहता है। वह कच्चा ही चबा जाता है। यदि कोई पेड़ पर चढ़ जाये तो उसे भी नहीं छोड़ता है। उसका डर मुझे बार-बार सता रहा है।''

बहिन—''मेरे मीठे भैया तुम निश्चिंत रहो; बाबा ने हमें भालू से सावधान रहने के तथा उससे सामना करने का उपाय भी बताया है।'' इस प्रकार से वे बातें करते आगे बढ़ रहे थे। जंगल के टेड़े रास्ते को पार कर रहे थे।

अचानक उनसे कुछ दूर सामने की झाड़ी से एक काली-सी आकृति निकली। इसे देखते ही बालक सहम गया। फिर बोला—य...ह...क्याSS...है? बहिन को यह समझते देर न लगी कि यह वही भयंकर जंगली भालू है इससे बचना बहुत कठिन है। इन्सान यदि पेड़ पर चढ़ जाये तो भी वहीं चढ़ जाता है।

स्वच्छ चांदनी में स्पष्ट नजर आ रहा था। वह घूमता हुआ उनके करीब आ रहा था। दोनों अपने स्थान पर बुत की तरह खड़े हो गये। उनकी दिल की धड़कन तेज हो गई।

मौत को सामने देखकर अच्छे के होश उड़ जाते हैं। थोड़े से समय में निर्णय लेना था। इंसान के जीवन में कुछ समय ऐसा आता है जो उसके धैर्य व साहस की परीक्षा लेता है।यदि वह उसमें सफल हो गया तो वह दूसरों से ऊंचा उठ जाता और दुनिया उसे पूजती है। ''धैर्य बुद्धिमानी से बड़ा होता है।'' युक्ति से मुक्ति मिलती। अत: समय पर जो कोई वस्तु काम दे वही सच्ची यथार्थ है। उस बहादुर बालिका ने धैर्य का साथ नहीं छोड़ा और एक युक्ति निकाली। उसके पास दियासलाई जिसे वह आग तापने के लिए लाई थी। उसे याद आया कि भालू आग से बहुत डरता है। अत: एक सेकंड में दियासलाई निकाल कर जला ली। भालू एकदम नजदीक आ गया था। जैसे ही उसने बालिका के हाथ में दियासलाई प्रज्ज्वलित होते देखा तो वह सर पर पैर रखकर भागा। पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। दोनों की जान बच गई।

आज इस संसार रूपी कांटों के जंगल में माया रूपी भालू रहता है। जो आप पुरुषार्थी के मार्ग में कभी भी आ सकता है आपको हप करने के लिए। यदि अचानक आ जाये तो योग

शेष पृष्ठ ३२ पर

आध्यात्मिक सेवा समाचार

□ब्र.कु. लक्ष्मण एवम् ब्र.कु. सत्यनारायण, कृष्णानगर देहली., द्वारा संकलित

बम्बई—'पुनर्जन्म' विषय पर हुए निबन्ध प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए। प्रथम पुरस्कार डॉ. श्रीमती करुनालाल को दिया गया। उन्हें रु. ७५०० का बैंक ड्राफ्ट, सिलवर बैज तथा शील्ड दी गई। द्वितीय पुरस्कार डॉ. सुनन्दा जनार्दन तथा डॉ. के.एस. प्रभु दिसाई को दिया गया। उन्हें पच्चीस-२ सौ की राशि दी गई। तृतीय पुरस्कार भ्राता महेश विशिष्ठ तथा बी.के. तरला अकरूवाला ने प्राप्त किया। उन्हें पंद्रह-२ सौ रुपए की राशि दी गई। इसके अतिरिक्त सान्त्वना पुरस्कार भ्राता मोहनलाल अग्रवाल तथा संतोष चौरसी को एक-एक हजार रुपए के दिए गए। विद्यार्थी पुरस्कार कुमारी नीलोफर मुश्ताक अहमद, भ्राता प्रसनजीत सरकार तथा कुमारी विद्यावती एस. सायागोनकर को एक-एक हजार रुपए के प्रदान किए गए। ये पुरस्कार ब्र.कु.ई.वि. विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी जानकी द्वारा प्रदान किए गए।

शोलापुर में 'शिव प्रकाश भवन' का शिलान्यास: १८ मई को राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी शोलापुर महानगर के मध्य में स्थित प्लाट पर ईश्वरीय सेवा के लिये नए भवन का निर्माण करते हेतु, शिलान्यास करने हेतु पधारीं। इस भवन का नाम 'शिव प्रकाश भवन' रखा गया। शिलान्यास समारोह में बोलते हुए दादी जी ने कहा कि हमें अपनी दृष्टि, वृति एवं कृति को स्वयं बदलना होगा। विश्व परिवर्तन के लिए स्थान-स्थान पर तीन पैर पृथ्वी लेकर ये रूहानी हॉस्पिटल खोलने का आग्रह किया। शोलापुर के जिलाधीश भ्राता गायकवाड जी ने कहा, "मैं दादी जी के सामने यह निश्चय से कहता हूं कि हम सब मिलकर शीघ्र अति शीघ्र निर्माण कार्य शुरू करके इस 'शिव प्रकाश भवन' का उद्घाटन करने के लिए फिर से दादी जी को जल्दी बुलाएंगे।"

पाटन—६ जून को सेवाकेंद्र के लिये बनाए नए मकान का उद्घाटन ब्र.कु.ई.वि. विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी द्वारा संपन्न हुआ। उद्घाटन में प्रवचन करते हुए दादी जी ने कहा कि संस्कार बदलने से ही संसार बदलेगा। इसके अतिरिक्त मणियारी गांव में शांति प्रेरक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे गांव की १५०० आत्माओं ने लाभ लिया।

आगरा—ग्रामीण सेवा अभियान के अंतर्गत अनेक गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनियां लगाई गईं। जैसे उफेरी दरेसी नं. २, पोश्या घाट, बिजराम आदि स्थान मुख्य हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किए गए जिसे हजारों की संख्या में आत्माओं ने लाभ उठाया।

बेलगाम—ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी के बिजापुर पहुंचने पर वहां के निवासियों द्वारा भव्य स्वागत हुआ। ततपश्चात् बिजापुर सेवाकेंद्र पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों से स्नेह-मिलन हुआ। बिजापुर से ४० कि.मी. पर बसवन बागेवाड़ी में सेवाकेंद्र में नए मकान का उद्घाटन किया। इसके पश्चात् मुद्देबिहाल में भी एक भव्य ओमशांति भवन का उद्घाटन किया। इस नवनिर्मित ओमशांति भवन में एक आध्यात्मिक संग्रहालय भी बनाया गया है। इसमें बड़ा सुन्दर हाल है जिसमें एक हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था है। उद्घाटन समारोह के अवसर पर एक शांति यात्रा भी निकाली गई जिसमें ३००० भाई-बहनों ने भाग लिया। दादी जी मुद्देबिहाल से बागलकोट पहुंचे। वहां पर भी आध्यात्मिक कार्यक्रम हुए। ततपश्चात् मुधोल रवाना हुए। वहां पर भी राजयोग भवन का फाउंडेशन स्टोन दादी जी ने रखा। मुधोल से दादी जी बेलगाम पहुंचे, वहां पर भी राजयोग भवन का शिलान्यास किया।

चण्डीगढ़ व कौसौली—सेवाकेंद्रों के संयुक्त प्रयास से वहां के प्रसिद्ध गांधी मैदान में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेला तथा एक दिन का आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। चेतन देवियों की झांकी तथा स्वर्ग की झांकी मुख्य आकर्षक का केन्द्र रही। मेले का उद्घाटन ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. दादी चन्द्रमणि जी, स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर पी.के. कौल इत्यादि मुख्य महानुभाओं द्वारा संपन्न हुआ। चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन में प्रवचनों, दिव्य गीतों तथा रामराज्य नामक नाटक आदि का कार्यक्रम चला। सम्मेलन में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. एस.एस. सक्सेना ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा अपने विचार व्यक्त किये।

बिलासपुर—सेवाकेंद्र से समाचार मिला है कि "मानव जागृति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन उपमहापौर भ्राता अनिल जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। साथ ही नयापार कालोनी में शिव मंदिर में "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी" का शुभारम्भ एडवोकेट भ्राता आर.एल. छाबड़ा ने फीता काटकर किया। इसके अतिरिक्त ग्राम रतनपुर के महामाया मंदिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन नगरपालिका अध्यक्ष भ्राता नरेन्द्र शर्मा ने किया। जिससे अनेकानेक आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया।

नासिक—स्वर्ण ज्यन्ति वर्ष एवं शांति वर्ष के उपलक्ष्य में देवलाली कैम्प में कन्टोनमेन्ट बोर्ड गर्ल्स स्कूल में स्वर्ण ज्यन्ति आध्यात्मिक

शांति मेला आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन कन्टोनमेन्ट बोर्ड देवलाली कैम्प के वाईस प्रेसिडेंट भ्राता बोमी नेतरवाला द्वारा सम्पन्न हुआ। मेला के साथ-साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें बहुत अच्छे लोगों ने भाग लेकर लाभ उठाया।

पणजी-गोवा—सेवाकेंद्र की तरफ से सुवर्ण महोत्सव एवं अंतरराष्ट्रीय शांति वर्ष के उपलक्ष्य में सावडे गांव में सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें इस गांव के प्रतिष्ठित नागरिक तथा रिटा. अध्यापक भ्राता नारायण लॉड जी ने उद्घाटन किया। इसके अलावा "दी न्यू एज्युकेशन इंस्टीच्यूट" हाईस्कूल में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन डॉ. रविन्द्र कृष्ण संजगिरी (यू.एस.ए.) ने किया। यहां तीन दिन का राजयोग शिविर भी रखा गया जिसका अनेक आत्माओं ने लाभ लिया।

बेरहामपुर—सेवाकेंद्र की ओर से विशाल प्रदर्शनी का आयोजन फुलवाड़ी जिला में किया गया जिसका उद्घाटन वालेश्वर भ्राता जी ने किया। इस प्रदर्शनी को ६००० आत्माओं ने देखा तथा १०० आत्माओं ने सप्ताह कोर्स किया। पदयात्रा तथा कांफ्रेंस की फिल्म भी दिखाई गयी।

अहमदाबाद इशनपुर—सेवाकेंद्र की ओर से डॉक्टरों का स्नेह मिलन रखा गया जिसमें इशनपुर व मणिनगर में रहने वाले डॉक्टरस उपस्थित हुए। "मेडीटेशन और मेडिसन" विषय पर ब्र.कु. कोकिला बहन ने प्रवचन किए। ब्र.कु. शारदा बहन ने राजयोग पर समझाया। इन प्रोगामों में आये हुए सभी डॉक्टरस बहुत प्रभावित हुए। सेवाकेंद्र के योगयुक्त व शान्त वातावरण ने उनके विचारों पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला।

जयपुर—राजापार्क द्वारा सिविल लाइंस में "विश्व-एकता एवं शांति" नामक एक झांकी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वआत्माओं की चैतन्य झांकी सजाई गयी थी, जो कि सोडाला स्थित वैकुण्ठनाथ जी के मंदिर में यह झांकी लगायी गयी। इसके अलावा रेलवे कालोनी में एक दिवसीय प्रदर्शनी लगायी गयी जिसको देखने के लिए हाईकोर्ट के जज गोपाल कृष्ण शर्मा जी भी पधारे। मोतीनगर व मालवीया नगर में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गयी जिसको हजारों आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया।

बड़ौदा—आजवा रोड पर नवजीवन एपार्टमेंट के पास दो दिन तक "विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी" चैतन्य देवियों की आकर्षकमूर्त झांकी के साथ लगाई गई, जिसका उद्घाटन पास के सरदार एस्टेट के डॉयरेक्टर भ्राता रमन भाई पंडया जी ने किया। प्रदर्शनी द्वारा सोसायटी वर्ग के साथ मजदूर गरीब वर्ग ने भी लाभ उठाया।

भाडुंप—सेवाकेंद्र द्वारा शहर में जगह-जगह पर प्रदर्शिनियां लगाई गई। जिसमें शावती बिल्डिंग का कंपाउंड, गणेश मंदिर, शिव मंदिर, महानगरपालिका दवाखाना का कंपाउंड आदि-आदि स्थानों के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रदर्शनी के पश्चात् सेवाकेंद्र पर त्रिदिवसीय राजयोग शिविर भी रखा गया। शिविर करने के बाद कई आत्माओं ने साप्ताहिक कोर्स भी किये जिनमें से कुछ आत्मायें अब नियमित रूप से सेवाकेंद्र पर आ रही हैं।

मुलुंड-बम्बई—सेवाकेंद्र की ओर से लोनावाला में शिव बाबा के एक नए घर का उद्घाटन इन्दु नाइक के द्वारा हुआ। वर्तमान समय लोनावाला में गणेश मंदिर, म्युनिसिपल स्कूल वलवन, पड़गांव इत्यादि स्थानों पर विश्व शांति प्रदर्शनी एवं त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शनी को १२००० लोगों ने देखा था, १०० आत्माओं ने योग शिविर किया। २००

मुलुंड चेकनाका—सेवाकेंद्र द्वारा किसननगर नं.-३ में महानगर-पालिका स्कूल के काम्पाउंड में दो दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन स्थानीय शिवसेना के अध्यक्ष भ्राता प्रकाश भोंसले ने किया। इस प्रदर्शनी से करीब एक हजार आत्माओं ने लाभ लिया।

कोल्हापुर—सेवाकेंद्रों की तरफ से रत्नागिरि शहर में ३ दिन की विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन भ्राता रमेशचंद्र कानडे जिलाधिकारी ने किया। इस प्रदर्शनी के अंतर्गत ५ हजार आत्माओं ने बाबा का परिचय पाया तथा २०० भाई-बहनों ने राजयोग शिविर किया।

साथ-साथ यहां के ५० भाइयों ने सायकल्यात्रा द्वारा ४५ गांवों में ईश्वरीय संदेश दिया।

तमलुक-मिदनापुर—सेवाकेंद्र की ओर से स्वर्ण जयन्ति वर्ष के उपलक्ष्य में गांव-गांव में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी तथा अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। पहला वर्ष की पूर्ति के उपलक्ष्य में डिसट्रिक लाइब्रेरी में एक उत्सव का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन एस.डी.ओ. भ्राता अमिताभ मुखर्जी जी ने किया। एस.डी.ओ. साहब जी ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बहुत सराहना की। और उन्होंने कहा यह संस्था मानव कल्याण के लिये बहुत प्रेरणा दे रही है, इससे तो हम सबको लाभ लेना चाहिए। उन्होंने माउंट आबू की भी बहुत सराहना की।

खण्डवा—सेवाकेंद्र द्वारा मुलठान गांव में भव्य लक्ष्मीनारायण एवं दुर्गा की चैतन्य झांकी सजाकर गांव में रैली निकाली गई। इस रैली का उद्घाटन वहां के सरपंच श्री नंदकिशोर झुमरावल ने किया। गांव के मुख्य मार्गों पर करीब २० गेट बनाये गये एवं शिव बाबा के झंडे लगाये गये। इस रैली का ग्रामवासियों ने ३५ स्थानों पर पुष्पों द्वारा भव्य स्वागत किया एवं फलों का वितरण भी किया गया।

इस रैली से वहां की ३००० जनता ने लाभ लिया और ग्रामवासियों ने प्रभावित होकर सेवाकेंद्र बनाने हेतु भूमि दान में दी है। यहां पर प्रतिदिन ५० भाई-बहन ज्ञान स्नान करने लगे हैं।

होशियारपुर—राजयोगा एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय शांति वर्ष के उपलक्ष्य में एक अंतर्विद्यालय (Inter-school) भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों के लगभग ३० बच्चों ने

भाग लिया । विजेताओं को विशेष पुरस्कार दिए गए । बच्चों के साथ आए हुए अध्यापकों तथा संरक्षकों को भी आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया गया । इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया । कार्यक्रम की सफलता को देख जनता ने ऐसे कार्यक्रम समय-प्रति-समय आयोजित करते रहने को कहा ।

कार्यक्रम का समाचार जालंधर से प्रकाशित समाचारपत्रों में भी छपा ।

सिकन्दराबाद—की ओर से गांव-२ में ईश्वरीय संदेश देने का कार्य चल रहा है । हर सप्ताह एक गांव में प्रदर्शनी की जाती है । लुहारली गांव में ग्राम विकास प्रदर्शनी भाषण आदि का प्रोग्राम चला ।

पहेली हल करो तो जानें.....?

□ब्र.कु. प्रेम सागर, लक्ष्मीनगर., देहली

सामने हम एक 36 खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं, पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ और तीसरा काला। अब आपको सफेद वाले खाने में सही उत्तर भरना है, जिसमें हमने एक से लेकर दस तक नम्बर दिए हुए हैं। उसके लिए हम आपको अन्त में बाप दादा द्वारा उच्चारे हुए महावाक्यों का एक समूह दे रहे हैं। यह समूह भी दस पंक्तियों का है। अब आपको करना क्या है प्रत्येक सफेद खाने वाले नम्बर में आपको उसी नम्बर की पंक्ति वाले वाक्य से एक शब्द चुनकर उस खाने में भर देना है। उदाहरणार्थ एक नम्बर वाले खाने में एक नम्बर की पंक्ति से एक शब्द, इसी प्रकार दूसरे वाले खाने में दूसरे नम्बर की पंक्ति से, आगे इसी तरह...... दस तक भरिए। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात् कोई न कोई बाप दादा द्वारा दिया गया धारण युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोगन लगभग 16 शब्दों का होगा, जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कही पर दिया हुआ होगा। इस पहेली को हल करने के लिए निर्धारित समय 10 मिनट। ■

महावाक्यों का समूह

(1) तुम बच्चे जानते हो कि बाप आया हुआ है।

पृष्ठ २९ का शेष

अग्नि जलाओ, ज्योतिर्बिन्दु अर्थात् ज्वाला बन जाओ । जैसे ही बुद्धि का तार लाइट हाउस एवं माइट हाउस शिव बाबा से सेकंड में जोड़ेंगे तो हमारी आत्म-ज्योति जग जायेगी । जिसे देखते ही माया रूपी भालू यूं भागेगा फिर आपके सामने नहीं आयेगा ।

मीठे बाबा--गैरेंटी करते—बच्चे अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करो तो माया तुम्हारे सामने आ नहीं सकती ।

यही सबसे बड़ी सुरक्षा का साधन है । ज्ञान सबके पास है परंतु शिव बाबा कहते ज्ञान-शक्ति गुण को समय प्रमाण कार्य में लगायें वही यथार्थ है, सत्य है । □□

मीठे	बच्चो:		जितना		1
2			का		
	3		करोगे		4
5		6		या	
	7		8		द्वारा
9		10		करोगे	

(2) परन्तु माया भी कम नहीं जो तुम्हें घड़ी-घड़ी बाप की याद भुला देती। (3) दुनिया वाले तुम्हारा कितना भी तिरस्कार भले क्यों न करें फिर भी तुम्हें उनको बाप का पैगाम जरूर देना है। (4) जो जितना बाप का पैगाम दूसरों को देगा वह उतना ऊँच पद भविष्य में पायेगा। (5) भक्तों की क्यू तो अन्त में लगेगी लेकिन अभी तो राजधानी स्थापन हो रही है। (6) फिर भी उद्धार तो सभी का आप बच्चों के द्वारा होना है। (7) देवी-देवता के रूप में तो तुम सतयुग में होंगे। (8) इस समय तो तुम हो ईश्वरीय परिवार के बाकि सब है आसुरी सम्प्रदाय वाले (9) ईश्वरीय परिवार का बनने से ही पूरे कल्प में आपको सत्कार मिलता है। (10) इतनी ऊंच प्राप्ती सिवाय बाप के और कोई प्राप्त करा नहीं सकता। □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, सम्पादक, ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रेस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया । Regd No. 10563/65-D, (E)—70